चन्दामामा
माँ – बच्चों

Chandamama, May '50

Photo by : Gopa

गाने वाला

पंडित डी. गोपालाचार्लु की
अरुणा
स्वर्णजयंती
1899 - 1949
आयुर्वेद के पुनरुद्धारक
गर्भाशय के
रोग दूर करनेवाली

चन्दामामा
विषय सूची

इनके अलावा मन बहलाने वाली पहेलियाँ, सुन्दर रँगीले चित्र, और भी अनेक प्रकार की विशेषताएँ हैं।

चन्दामामा कार्यालय

पोस्ट बाक्स नं० १६८६

मद्रास-१

ग्राहकों को एक सूचना

★

चन्दामामा हर महीने पहली तारीख के पहले ही डाक में भेज दिया जाता है। इसलिए जिनको चन्दामामा न पहुँचा हो वे तुरंत डाक घर में पूछताछ करें और फिर हमें सूचित करें। १०-वीं तारीख के बाद हमें पहुँचने वाली शिकायतों पर कोई ध्यान न दिया जाएगा। कुछ लोग तीन-तीन महीने बाद हमें लिखते हैं। पत्र-व्यवहार में ग्राहक-संख्या का अवश्य उल्लेख करें।

व्यवस्थापक: 'चन्दामामा'

पो. बा. नं. १६८६ :: मद्रास-१

चन्दामामा

माँ-बच्चों का मासिक पत्र

संचालक: चक्रपाणी

वर्ष १ | मई १९५० | अङ्क ९

मुख-चित्र

जब से योग-माया ने कहा कि उसको मारने वाला पैदा हो गया है, तब से कंस के मन में खलबली मच गई। उसने सिपाहियों को भेज कर अपने राज में जितने बच्चे थे, सब को मरवा डाला। लेकिन तब भी उसके मन का खटका नहीं मिटा। तब उसने कृष्ण को ढूँढ़ निकालने और मार डालने के लिए पूतना को नियुक्त किया। पूतना एक बड़ी कुटिल राक्षसी थी। वह एक सुन्दर स्त्री का रूप बना कर और कृष्ण को ढूँढ़ने गोकुल पहुँची। गोकुल में उसे पता चला कि नन्द के घर हाल ही एक सुन्दर बालक जनमा है। वह तुरन्त वहाँ गई। एक सुन्दर स्त्री के रूप में रहने के कारण उसे किसी ने अन्दर जाने से नहीं रोका। इस तरह पालने के पास जाकर उसने कहा—'कन्हैया! मेरा लाड़ला कन्हैया कहाँ है? नन्हे कन्हैया को एक बार मुझे भी गोदी में लेने दो न बहन!' यह कहते हुए उसने कृष्ण को गोदी में उठा लिया और अपने जहर बुझे कलेजे से लगा कर दूध पिलाने लगी। कृष्ण ने उसका छल जान कर दूध के साथ साथ उसके प्राण भी खींच लिए। यशोदा ने आकर देखा तो कृष्ण पूतना की लाश पर खेल रहे थे।

न्याय का घण्टा

बहुत पुरानी बात; एक था
राजा राज किया करता।
बड़े न्याय से सदा राज के
सारे काज किया करता।

फिर भी कहीं न कहीं कुछ न कुछ
भूल – चूक हो ही जाती।
प्रजा किसी न किसी जालिम के
हाथों दुख पा ही जाती।

तब राजा ने सोच – समझ कर
इस का एक उपाय किया।
घण्टा एक बँधाया उसने
ठीक नगर के बीच नया।

उसने पिटवा दिया ढिंढ़ोरा
'न्याय चाहने वाले सब।
आकर घण्टा खींचें; राजा
न्याय करेंगे उनका तब।'

इसी तरह कुछ दिन बीते जब
फैली शांति राज भर में।
पर घण्टे की रस्सी टूटी
घिस कर लोगों के कर में।

तब लटका दी किसी चिबिल्ले
ने इक टहनी रस्सी पर।
खींचा उसे एक बूढ़े खर
ने पत्तों का लालच कर।

घण्टी बजी, गधे के मालिक
को राजा ने बुलवाया।
वह धोबी था; डरता डरता
राजा के सम्मुख आया।

'छुट्टा गधा भटकता है क्यों?'
पूछा उससे राजा ने।
बोला धोबी—'किसी काम का
रहा न गधा बुढ़ापे से।'

'बूढ़े हो जाने पर तेरे
लड़के भी तुझसे यों ही-
अगर पेश आएँ तो?' पूछा
राजा ने उस से त्यों ही।

यह सुन शरमा कर धोबी ले
चला गधे को अपने घर।
'कैसा सुन्दर न्याय हुआ है?'
कहा सभी ने खुश होकर।

जैसे को तैसा

एक राजा था। उसके दो रानियाँ थीं। बड़ी रानी अपने पति से सच्चा प्रेम करती थी। लेकिन छोटी रानी बड़ी ही कुटिल थी। वह किसी न किसी तरह राजा और बड़ी रानी को मार कर खुद राज करना चाहती थी। इसलिए उसने एक दिन राजा के नाई को बुलाया। नाई बेचारा डरते-डरते छोटी रानी के महल में गया। छोटी रानी ने नाई को देखते ही सभी दास-दासियों को किसी बहाने से बाहर भेज दिया। तब एकांत में उसने नाई से कहा—"ठाकुर! तुम्हें मेरा एक काम करना होगा। अगर तुमने यह काम कर दिया तो मैं तुमको मुँह-माँगा ईनाम दूँगी। नहीं तो तुमको कुत्ते की मौत मरना होगा। समझे!" नाई ने काँपते हुए कहा—"मालिकिन का जो हुक्म होगा, बजा लाऊँगा। मेरी जान बख्श दीजिए!" छोटी रानी ने धीरे से कहा—"देख! मैं जो बात कहती हूँ, वह किसी को मालूम न हो। राजा की हजामत तू ही करता है न!" नाई ने कहा 'हाँ।' "इस बार अब तू हजामत बनाने आना तब उस्तरे से राजा का गला काट लेना! समझ गया न? ले, यह हज़ार रुपए की थैली! काम करके आएगा तो जो माँगेगा, दूँगी। खबरदार! यह बात किसी को मालूम न होने पाए!" इस तरह बार बार चेता कर उसने नाई को बिदा कर दिया। रुपए की लालच में पड़ कर नाई राजा की जान लेने पर आमादा हो गया। वह बड़ी उतावली से राजा की हजामत के दिन की राह देखने लगा।

राजा के क़िले से पाँच मील की दूरी पर एक छोटा-सा गाँव था। उस गाँव में एक

कुमारी लीला

ग़रीब ब्राह्मण रहता था। उस गाँव के और राजा के क़िले के बीच एक जंगल पड़ता था। वह ब्राह्मण हर रोज़ उस जंगल को पार कर राजा के क़िले में आता और पोथी-पत्रा पढ़ कर यजमानों से कुछ न कुछ माँग ले जाता। इस तरह वह मुश्किल से अपनी जीविका चलाया करता था।

एक दिन हर रोज़ की तरह ब्राह्मण तड़के उठा। नहा-धोकर पोथी-पत्रा काँख में दबाया और राजा के क़िले की ओर चल पड़ा। चलते-चलते जब वह बीच जंगल में पहुँचा तो अचानक एक भालू दीख पड़ा। भालू एक पेड़ से उतर कर नीचे आ रहा था। ब्राह्मण ने सोचा—अब उसकी जान गई। उसके पैर लड़-खड़ाने लगे। बदन से पसीना छूटने लगा। पर उसने किसी न किसी तरह अपने आपको सम्हाला। अचानक उसके भर्राए हुए गले से एक पद निकल गया—

'देख रहा टकटकी लगा कर,
क्या मारेगा मुझको आकर?'

लेकिन भालू ने उसे कुछ न किया। वह चुपचाप अपनी राह चला गया।

ब्राह्मण खुशी-खुशी क़िले में पहुँचा तो वह रोज़ की तरह पोथी-पत्रा बाँचना भूल गया। उसके बदले वह जहाँ जाता यही गाने लगता:—

'देख रहा टकटकी लगा कर,
क्या मारेगा मुझको आकर?'

ब्राह्मण इस तरह क़िले की सभी सड़कों पर घूमा। लेकिन आज किसी ने उसे एक मुठ्ठी भर चावल भी नहीं दिया। घर-घर घूमते घूमते ब्राह्मण ऊब गया। इतने में उसे ज़मीन पर कोयले का एक टुकड़ा दीख पड़ा। उसने

करके उसने उस्तरा हाथ में लिया और राजा के गले की तरफ़ ग़ौर से देखने लगा। इतने में राजा की नज़र दीवार पर लिखे ब्राह्मण के उस पद पर जा पड़ी। उसने ज़ोर ज़ोर से पढ़ा—

'देख रहा टकटकी लगा कर,
क्या मारेगा मुझको आकर?'

यह सुन कर नाई ने सोचा—'शायद राजा को मुझ पर शक हो गया है। इसीलिए वह ऐसा कह रहा है।' वह तुरन्त उस्तरा वहीं छोड़ कर गिरता-पड़ता भागने लगा। उसे

वह टुकड़ा उठा लिया और उससे राजा के महल के सामने की दीवार पर वही पद लिख दिया। फिर निराश होकर थका-माँदा घर लौट गया।

दूसरे दिन राजा ने हजामत बनवाने के लिए नाई को बुलवाया। नाई मन ही मन फूलता हुआ आ पहुँचा। ब्राह्मण ने जिस दीवार पर वह पद लिख दिया था उसी के सामने आसन डाल कर राजा हजामत बनवाने बैठा। नाई उस्तरा निकाल कर तेज़ करने लगा। इतने में उसका हाथ काँपने लगा। पर किसी तरह हिम्मत

भागते देख सिपाहियों ने उसे पकड़ लिया और राजा के सामने ला खड़ा किया। अब राजा को भी शक हो गया। उसने डपट कर पूछा—'क्या बात है? जल्द बता!'

डर से काँपता घिघियाता नाई राजा के पैरों पर गिर पड़ा। उसने रानी की सारी करतूत कह दी।

छोटी रानी की दुष्टता जान कर राजा को बड़ा अचरज हुआ। क्रोध से उसकी आँखें लाल हो गईं। उसने छोटी रानी को कैद कर लाने की आज्ञा दी। छोटी रानी सिपाहियों

के बीच रोती-धोती आई। अपनी जान बचाने के लिए उसने बहुत विनती-चिरौरी की। बहुत से आँसू बहाए। लेकिन राजा ने उसकी एक न सुनी। उसने उसे तुरन्त प्राण-दण्ड दिया। नाई को देश-निकाला दिया गया। तब कहीं जाकर राजा का क्रोध शांत हुआ।

थोड़ी देर बाद राजा सोचने लगा—"इसी पद की वजह से तो मेरी जान बची! यह पद इस दीवार पर कैसे आ गया? उसे किसने लिखा और क्यों लिखा!" उसने तुरन्त सिपाहियों को बुला कर ढिंढौरा कराया—"जिसने यह गाना इस दीवार पर लिख दिया है वह दरबार में हाजिर हो। उसे राजा साहब भारी ईनाम देंगे।" यह सुन कर बहुत से लोग आपस में झगड़ते हुए आए। हरेक का दावा था कि उसी ने वह गाना लिखा है। लेकिन उनमें से कोई राजा के सवालों का जवाब न दे सका। वे सब किसी न किसी तरह अपनी जान बचा कर भागे।

दूसरे दिन गरीब ब्राह्मण फिर क़िले में भीख माँग ले जाने के लिए आया तो उसने सब जगह उस गाने की चर्चा सुनी। तब उसने महल के सामने पहरा देने वाले सिपाही से जा कर कहा—"जाओ, राजा से जाकर कहो कि जिसने उस दीवार पर वह गाना लिखा था वह ब्राह्मण आया है।" राजा ने ब्राह्मण को तुरन्त अन्दर बुलवाया। उसने ब्राह्मण से पूछा कि 'तुमने क्यों यह गाना दीवार पर लिख दिया?' तब ब्राह्मण ने भालू का सारा किस्सा कह सुनाया।

तब राजा ने उस ब्राह्मण को भारी ईनाम दिया और उसे अपने पुरोहित का पद दिया। अब ब्राह्मण की सारी ग़रीबी दूर हो गई। वह राजा की पुरोहिताई करते हुए अपनी स्त्री और बाल-बच्चों के साथ सुख से रहने लगा।

सावन का झूला!

['अशोक' बी. ए.]

सावन की थी ऋतु हरियाली!
सबके मन थी सुख की लाली।
रिमझिम पानी बरस रहा था!
मोरों का मन हुलस रहा था।

उसी समय खुश हो भामा ने–
उसकी लघु भगिनी रामा ने–
मिलकर खिचकर डाला झूला!
नाच उठीं, मन उनका फूला।

सखियों को वे गईं बुलाने–
अपने संग में उन्हें झुलाने।
रंभा, गिरिजा, कमला, विमला,
चंदा, लक्ष्मी, चंपा, सरला

आठों सखियाँ दौड़ी आईं!
मन में वे फूली न समाईं।
पाँच-पाँच की जोड़ी रख कर,
आपस में टोली में बँट कर,

लगीं झूलने सखियाँ झूला!
झूले में उनका मन भूला।
हिल-मिलकर सावन का गाना–
गाती थीं वे नया तराना।

इतने में बस, आया पानी!
भूल गईं सारी मनमानी।
बड़े ज़ोर से पानी आया!
और साथ में आँधी लाया!

छोड़ा खेल-तमाशा सबने!
झूला छोड़ भगीं घर अपने।
फिसला पैर तभी कमला का!
उस पर पैर पड़ा सरला का।

'हाय दई!' कमला चिल्लाई!
'अरे बाप!' सरला चिल्लाई।
आगे गड्ढा एक बड़ा था!
उसमें पानी खूब भरा था।

गिरिजा गिरी उसी में जाकर!
बोली–'मुझे बचाओ आकर।'
सखियों ने तब उसे निकाला!
कीचड से था सब तन काला।

की न किसी ने फिर मनमानी!
भूल गईं सारी शैतानी।
बंद हुआ सावन का झूला!
फिर न किसी ने झूला डाला।

नागवती

वहाँ दूर देश में राजा अपने पड़ाव में सुख से सो रहा था। इतने में उसे ऐसा लगा जैसे कोई उसे थपकी देकर जगा रहा हो। उसके कानों में किसी के ये शब्द गूँजने लगे—"उठो, राजा! उठो! वहाँ तुम्हारी सन्तान भूखों तड़प रही है और तुम यहाँ निश्चिन्त सो रहे हो!"

राजा चौंक कर जाग पड़ा। उसे ऐसा लगा कि जरूर उसकी बच्चियाँ किसी न किसी सङ्कट में पड़ गई हैं। वह जल्दी-जल्दी गहने, कपड़े, खिलौने, मिठाइयाँ वग़ैरह ख़रीद कर अपने राज की ओर लौट पड़ा। महल के नज़दीक आते ही राजा के घर लौटने की सूचना देने के लिए नगाड़ा बजा। राजा ने देखा कि बाहर आकर उसकी अगवानी करने वालों में उसकी बच्चियाँ नहीं हैं। यह देख कर उसके मन की व्याकुलता और भी बढ़ गई। वह सीधे रत्ना देवी के महल में गया। 'लड़कियाँ कहाँ हैं?' राजा ने चारों ओर देख कर पूछा।

"आप पूछते हैं कि लड़कियाँ कहाँ हैं? आपकी पहली रानी आई और मुझे मार-पीट कर लड़कियों को अपने साथ ले गई।" रानी ने मुँह फुला कर कहा।

राजा ने सोचा कि उसके दूसरा ब्याह करने की वजह से शायद लक्ष्मी देवी को गुस्सा आ गया है और इसी से वह आकर अपनी सन्तान को ले गई है। उसने बच्चियों को खोजने के लिए देश भर में आदमी दौड़ाए। लेकिन जब कहीं उनका पता न चला तो वह स्वयं उन्हें खोजने निकला।

इस तरह ढूँढ़ते-ढूँढ़ते जब वह नगर के बाहर जङ्गल में गया तो उसे जमीन पर कुछ पैरों के चिह्न दिखाई दिए। सात छोटे चिह्न थे और एक बड़ा। राजा ने सोचा कि ये सात चिह्न उसी की लड़कियों के हैं और

अपना सारा संबन्ध तोड़ लिया और रात दिन उन लड़कियों के साथ रहने लगा।

तब राजा को मोहने के लिए रत्ना देवी ने जङ्गल से बहुत-सी जड़ी-बूटियाँ मँगवाईं।

एक दिन राजा स्नान करने गया। मौका देख कर रानी ने एक दासी द्वारा राजा के थाल में मोहन-रस मिलवा दिया। खाना खाते ही जड़ी ने अपना असर दिखाया। सहसा राजा के मन में रत्ना देवी पर ऐसा मोह पैदा हो गया कि वह अपने को सम्हाल न सका। लड़कियाँ सो रही थीं। राजा उठा और सीधे जाकर रत्ना देवी का दरवाजा खटखटाया। लेकिन रत्ना देवी ने किवाड़ नहीं खोला। वह अन्दर से ही बोली—"तुम्हें तो अपनी लड़कियाँ प्यारी हैं न? फिर मेरे पास क्यों आए हो? लौट जाओ! जब उन सब को मार आओगे, तभी मैं दरवाजा खोलूँगी।"

"हाय! हाय! कहीं अपने बच्चों को भी कोई मार डालता है?" राजा चिल्ला उठा।

"अगर अपने हाथों मारना नहीं चाहते हो तो जाकर घोर जंगल में छोड़ आओ!" रत्ना देवी ने कठोर स्वर में कहा। मोहन-रस के प्रभाव से अन्धे बने हुए, राजा ने रानी की बात मान ली। उसने अपने

बड़ा चिह्न रानी लक्ष्मी देवी के पैरों का है। अब उसे पूरा विश्वास हो गया कि रत्ना देवी ने जो कहा था, वह सच था। वह उसी रास्ते से चल पड़ा और थोड़ी ही देर में उस मन्दिर के पास पहुँच गया जिसमें उसकी प्यारी बच्चियाँ भूखों पड़ी थीं। मन्दिर में ताला लगा हुआ था। यह देख कर राजा को शक हो गया और ताला तुड़वा कर वह अन्दर चला गया। वहाँ जाकर देखता क्या है कि उसकी सातों बेटियाँ अधमरी पड़ी हुई हैं। राजा उन्हें उठवा कर महल में ले आया। लड़कियों ने सौतेली माँ की क्रूरता की सारी कहानी राजा को सुना दी। तब राजा ने रत्ना देवी से

महल में लौट कर लड़कियों को जगाया और कहा—"बेटियो! उठो! मैं तुम सब को तुम्हारे ननिहाल ले जाऊँगा।" "हमारा ननिहाल? हम लोगों ने तो कभी नहीं सुना था कि हमारा भी कहीं एक ननिहाल है।" लड़कियों ने अचरज से कहा। "दस बरस पहले उनसे हमारा मन-मुटाव हो गया था। इसलिए हमने उनसे नाता तोड़ लिया था। लेकिन अब मैं सोचता हूँ कि तुम लोगों को ले जाकर एक बार उन्हें दिखा आऊँ।" राजा ने कहा। लड़कियाँ उठ कर राजा के साथ चलने को तैयार हो गईं। राजा को पूरी तरह अपने वश में जान कर, रत्ना देवी ने बड़ी खुशी से जहर मिली रोटियाँ बनवाईं और लड़कियों के लिए कलेवा तैयार कर दिया। एक अलग पोटली में उसने राजा के लिए रोटियाँ बाँध दीं। उसने राजा से कह दिया कि 'देखो! तुम लड़कियों की रोटियों में हाथ न लगाना और न उन्हें अपनी रोटियाँ देना।' राजा ने बिना जाने-बूझे सिर हिला दिया। वह अपनी सातों लड़कियों को साथ लेकर पैदल ही जङ्गल की ओर चल दिया।

थोड़ी देर में गाँव पीछे रह गया और वे लोग घने जङ्गल में पहुँचे। इतने में सबसे

छोटी लड़की नागवती ने एक उड़ता कौआ देखा। उसने रोटियों की पोटली में से एक रोटी का टुकड़ा तोड़ कर उसके सामने फेंक दिया। कौए ने टुकड़े में चोंच मारी और तुरन्त ज़मीन पर उलट पड़ा। क्षण में ही वह तड़प-तड़प कर ठण्डा हो गया। यह देख कर नागवती को बड़ा अचरज हुआ। उसने रोटी का और एक टुकड़ा तोड़ कर एक कुत्ते के सामने डाल दिया। खाते ही उस कुत्ते ने भी छटपटा कर दम तोड़ दिया। "इन रोटियों में तो ज़हर मिला हुआ है! अगर हमने खाई होतीं तो हमारी भी जान गई होती! मैं इन्हें कहीं फेंक दूँ तो कोई न कोई इन्हें खाकर नाहक़ अपनी जान गँवाएगा। इसलिए सबसे अच्छा यही होगा कि एक छोटा-सा गड्ढा खोद कर इन्हें मिट्टी के नीचे गाड़ दें।" नागवती ने अपनी बहनों से कहा। तब लड़कियों ने एक छोटा सा गड्ढा खोदा और उसमें अपनी सब रोटियाँ गाड़ दीं। राजा ने यह सब नहीं देखा। थोड़ी देर में वे बीच जङ्गल में पहुँच गए। अब बेचारी लड़कियों को ज़ोर की भूख लगी। तब उनमें से एक ने आगे-आगे चलने वाले पिता को रोक कर कहा—"पिताजी! मुझे बहुत भूख लगी है। अपनी पोटली में से एक रोटी दीजिए न!" "बेटी! मेरी पोटली में ये रोटियाँ नहीं हैं। कङ्कड़ पत्थर हैं। राह में जङ्गली जानवरों को मार भगाने के लिए मैंने इन्हें चलते वक्त पोटली में बाँध लिया था। थोड़ा और सब्र करो। तुम्हारा ननिहाल यहाँ से बहुत दूर नहीं है।" राजा ने जवाब दिया। लेकिन वह लड़की वहीं ज़मीन पर बैठ गई और हठ करने लगी। तब राजा ने एक छड़ी लेकर उसे मारना शुरू किया। तब बाकी लड़कियों ने आगे आकर रोका—'पिताजी! आप उसे मारिए मत। हम उसे समझा

देंगी।' यह कह कर उन्होंने उसे समझा-बुझा कर चुप कर दिया। सब लोग फिर आगे बढ़े।

चलते-चलते रात हो गई। तब राजा ने कहा—"जब तक हम लोग तुम्हारे ननिहाल पहुँचेंगे तब तक सब लोग खुर्राटे ले रहे होंगे। अन्धेरे में हमें कोई पहचानेगा भी नहीं। इसलिए हम आज रात के लिए यहीं कहीं सो जाएँगे।" वे सब एक पेड़ के नीचे सो रहे। राजा बीच में लेट गया और लड़कियाँ उसके अगल-बगल लेट गईं।

आखिर जब सभी लड़कियाँ सो गईं, तब राजा धीरे से उठा। उसने अपनी जगह एक लकड़ी का कुन्दा रख दिया और उस पर एक चादर ओढ़ा दी। फिर वह चुपके से अपने नगर की ओर चल दिया। थोड़ी देर में सबेरा हो गया। राजा ने एक तालाब के किनारे पहुँच कर हाथ-मुँह धोया और कलेवा करने बैठा। लेकिन जब उसने पोटली खोली तो देखा कि रोटियों के बदले उसमें कंकड़-पत्थर भरे थे।

"हाय! मैं कैसा पापी हूँ! भूख से तड़पती हुई सन्तान को मैंने रोटी नहीं दी। भगवान ने मुझे अच्छा दण्ड दिया।"

राजा ने सोचा। लेकिन राज-महल में पहुँचते ही वह उन लड़कियों की बात भूल गया।

इधर सवेरा होते ही लड़कियाँ जागीं। जगते ही उन्होंने पिता को पुकारा। लेकिन कोई जवाब न मिला। तब उन्होंने चादर हटा दी। देखा कि पिता की जगह वहाँ लकड़ी का एक कुन्दा पड़ा हुआ है। वे जोर जोर से रोने लगीं। थोड़ी देर बाद उन्होंने उठ कर निकट के एक तालाब में नहाया-धोया। अब उनकी भूख और भी बढ़ गई। अन्तड़ियाँ कुलबुलाने लगीं। चारों ओर जङ्गल ही जङ्गल दिखाई देता था। बेचारी अबोध लड़कियों को राह क्योंकर मालूम हो?

उसी समय श्रीनगर का राजा रामसिंह शिकार खेलते हुए उधर आ निकला। उसने इन सातों लड़कियों को देखा। उसने सोचा—"हाय! ये मासूम लड़कियाँ न जाने किस राजा की बेटियाँ हैं? सूरत देखने से ही मालूम हो जाता है कि इन्होंने दो तीन दिन से कुछ खाया-पीया नहीं है।" उसने अपने सिपाहियों को बुलाया और खाने-पीने की चीज़ें मँगा कर उन्हें भर-पेट खिलाया-पिलाया। फिर धीरे धीरे उसने उनकी सारी कहानी जान ली। उसके आश्चर्य का ठिकाना न रहा जब उसने सुना कि ये सातों बहनें उसी की भाँजियाँ हैं। क्योंकि वह वास्तव में लक्ष्मी देवी का भाई था और दस बरस पहले बहनोई से मन-मुटाव हो जाने से उसने बहन के घर आना-जाना छोड़ दिया था। रामसिंह अपनी भाँजियों को प्रेम के साथ श्रीनगर ले गया। उसके भी सात लड़के थे। उसने इन लड़कियों से उन सातों का ब्याह बड़ी धूम-धाम से कर दिया। नागवती का ब्याह सब से छोटे राजकुमार श्यामसिंह से हुआ।

* * *

इधर राजा रणधीरसिंह का भाग्य पलट गया था। उनके बुरे दिन आ गए थे।

दुश्मनों ने उनके राज पर चढ़ाई करके उन्हें हरा दिया। उनका राज-पाट छिन गया। उन्हें वेश बदल कर अपने नगर से भाग जाना पड़ा। राजा ने रत्ना देवी के साथ पड़ोस के कई राजाओं के पास जाकर मदद माँगी। लेकिन उसका कोई फल न हुआ। दुश्मन ने वहाँ भी उनका पीछा किया। आख़िर राजा ने रत्ना देवी से कहा—"अब यहाँ भी हमारा निवाह नहीं हो सकता। चलो, कुछ दिन तक हम कहीं छिप रहें। मेहनत-मजूरी करके पेट पाल लेंगे।" यह सोच कर वे दोनों जङ्गल में से होते हुए श्रीनगर पहुँचे। राह में उन्होंने कुछ सूखी लकड़ियाँ चुन कर एक गट्ठर बाँधा। राजा ने रानी को नगर के बाहर एक पीपल के पेड़ के नीचे बिठा कर कहा—'तुम यहीं रहो। मैं शाम तक लकड़ियाँ बेच कर कुछ पैसे कमा कर यहाँ आ जाऊँगा।' यह कह कर राजा लकड़ियों का गट्ठर सिर पर रख कर नगर में बेचने निकला। जब वह हाँक लगाते हुए राजमहल के निकट पहुँचा तो उसकी आवाज़ सुन कर लड़कियों ने उसे पहचान लिया। उन्होंने उसे बुला कर पूछा कि 'तुम कौन हो?' जब राजा ने अपना नाम बताया तो उन्हें उसका सारा रहस्य मालूम हो गया। लेकिन उनको उसकी करुण दशा देख कर दया आ गई। उन्होंने उसे अन्दर ले जाकर प्रेम से खिलाया-पिलाया।

इधर रत्ना देवी ने शाम तक अपने पति की राह देखी। लेकिन जब वह न आया, तब उसने सोचा—"इन मर्दों का कभी विश्वास नहीं करना चाहिए। मालूम होता है चार पैसे कमाते ही राजा ने मुझसे मुँह चुरा लिया है।" यह सोच कर वह जंगल की ओर बढ़ी और वहाँ एक बाघ ने उसे हड़प लिया।

* * *

लेकिन राजा रणधीरसिंह का स्वास्थ्य भी पूरी तरह बिगड़ गया था। वे अब थोड़े ही

दिनों के मेहमान थे। चौबीसों घण्टे पलङ्ग पर पड़े रहते थे। बहुत सी दवाइयाँ की गईं। लेकिन कोई फ़ायदा न हुआ। आख़िर वे अपनी लड़कियों के बीच प्रसन्न-चित्त से स्वर्ग चले गए। धूम-धाम से उनका श्राद्ध-कर्म किया गया।

* * *

तीन चार साल बीत गए। नागवती और उसकी बड़ी बहनें अपने पतियों के साथ सुख से दिन बिता रहीं थीं। नागवती की बड़ी बहनों के अब तक कोई सन्तान न हुई। लेकिन नागवती के गर्भ रह गया। यह समाचार सुन कर सिर्फ़ उसकी बहनों को ही नहीं, बल्कि उसके जीजाओं और उसके पति को भी बड़ा आनन्द हुआ। राज में चारों ओर खुशियाँ मनाई गईं। ग़रीबों को खाना कपड़ा बाँटा गया।

इतने में नागवती के पति श्यामसिंह और उसके छहों बड़े भाइयों को किसी काम से रामपुर जाना पड़ा। वे सब हरबे-हथियार बाँध कर लैस हो गए। घोड़ों पर चढ़ कर उन्होंने क़िले के चौकीदार रामजतन को बुला कर कहा—"रे! रामजतन! देख, हमारी ग़ैरहाज़री में अगर कोई साधू-सन्यासी, फ़कीर या भिखमंगे आएँ तो उन्हें क़िले के दरवाजे पर तुम्हीं भीख देकर भेज देना। अगर कोई परदेशी आएँ तो उन्हें क़िले में प्रवेश न करने देना। अगर किसी ने क़िले में क़दम भी रखा तो समझ ले कि तेरी जान की ख़ैर नहीं। ख़बरदार!"

फिर श्यामसिंह ने अपनी पत्नी नागवती को बुला कर कहा—'रानी! मैंने दरवाजे के बाहर जमीन पर सात लकीरें खींच दी हैं। जब तक मैं परदेश से लौट कर न आऊँ, तुम भूल कर भी उन लकीरों के बाहर क़दम न रखना।'

इसके बाद सातों भाई अपनी सारी सेना लेकर रामपुर की ओर रवाना हो गए। [सशेष]

एक राजा था। उसके राज में एक नाई रहा करता था। एक दिन उसे एक जङ्गल से होकर पड़ोस के एक गाँव में जाना पड़ा। राह में एक बड़ा भारी पेड़ था। जब वह उस पेड़ के नीचे से गुजरा तो उसे एक विचित्र कण्ठ-ध्वनि से यह सुनाई पड़ा—"बच्चे! क्या तुम अशर्फ़ियों से भरे सात बोरे चाहते हो? बोलो; अगर तुम चाहते हो तो ले जा सकते हो।" नाई ने सर उठा कर चारों तरफ़ देखा। लेकिन कहीं कोई दिखाई न दिया। तब उसने सोचा—"जरूर इस पेड़ पर कोई भूत रहता है। वह मुझे चकमा देने के लिए यों कह रहा है। अब यहाँ से सर पर पैर रख कर भाग जाना ही अच्छा है।" वह सोच कर वह वहाँ से भाग खड़ा हुआ। लेकिन वह थोड़ी ही दूर गया था कि उसी पेड़ से फिर वही शब्द सुनाई दिया—"अरे भाई! तुम्हीं को पुकार रहा हूँ। क्यों नाहक़ डर कर भागे जा रहे हो? मैं सच कहता हूँ—तुम चाहो तो अशर्फ़ियों के सात बोरे अभी ले जा सकते हो।" इस बार नाई के मन में भारी लोभ पैदा हो गया। सात बोरे अशर्फ़ियाँ! ओह! वह लौटा और पेड़ के पास आकर बोला—

"हाँ! मैं सातों बोरे चाहता हूँ।"

"अच्छा! तो अब तुम घर चले जाओ। अशर्फ़ियों के सातों बोरे तुम्हारे घर पहुँच गए। विश्वास न हो तो जाकर देख लो।" फिर उसी कण्ठ-ध्वनि ने जवाब दिया। यह सुन कर नाई के मन में उतावली के साथ साथ अचरज भी पैदा हुआ। वह सरपट दौड़ता घर की ओर चला। वह जानना

अमरसिंह

चाहता था कि पेड़ से जो कण्ठ-ध्वनि सुनाई दी उसमें कितनी सचाई है? घर जाकर उसने बड़ी उतावली के साथ दरवाजा खोला। देखता क्या है कि सामने ठीक सात बोरे पड़े हैं।

नाई ने एक एक करके सभी बोरों को खोल कर देखा। छः बोरे तो चमचमाती अशर्फियों से खचाखच भरे थे। लेकिन सातवाँ बोरा खाली था। उसमें सिर्फ़ कागज का एक पुरजा पड़ा था। उस पुरजे पर यों लिखा हुआ था—"मैंने तुम्हें अशर्फियों से भरे हुए छः बोरे दिए हैं। सातवें बोरे को अशर्फियों से भरना तुम्हारा काम है। अगर तुमने यह काम पूरा करने के पहले ही इन अशर्फियों में हाथ लगाया, तो तुम पर मेरा शाप पड़ेगा और तुम तुरन्त मर जाओगे। सातवें बोरे को अगर तुम अशर्फियों से न भर सकोगे तो बाक़ी बोरे भी ग़ायब हो जाएँगे।" इस पुरजे को पढ़ते ही नाई पर अशर्फियों की धुन सवार हो गई। कैसे सातवाँ बोरा भरा जाए जिससे ये बोरे भी उसके हो जाएँ?

लेकिन उतने बड़े बोरे को अशर्फियों से भरना क्या आसान काम था? नाई ने निश्चय कर लिया कि चाहे जिस तरह हो, पेट काट कर वह सातवें बोरे को अशर्फियों से भरेगा।

पहले उसने घर में जितने सोने-चाँदी के क़ीमती सामान थे, सब को बेच-बाच कर अशर्फियाँ जमा कीं और उन्हें बोरे में डाल दिया। लेकिन उनसे बोरे का एक कोना भी न भरा।

अब नाई ने पेट भर खाना भी छोड़ दिया। इस तरह उसने बहुत दिन

भयङ्कर ग़रीबी में काटे। लेकिन बोरा न भरा। तब नाई ने एक दिन राजा के पास जाकर कहा—"हुज़ूर! आजकल मैं भारी मुसीबत में पड़ गया हूँ। वेतन बिल्कुल काफ़ी नहीं होता। हुज़ूर इस ग़रीब पर कृपा करें!"

तब राजा ने नाई पर तरस खाकर उस महीने से उसकी तनख्वाह दुगुनी कर दी। नाई खूब किफ़ायत करके सारा का सारा वेतन बचा कर उस बोरे में डाल्ने लगा।

कुछ महीने और बीत गए। लेकिन बोरा भरने का नाम न लेता था। अब नाई के मन में एक बड़ी भारी चिन्ता पैदा हो गई।

वह सोचने लगा कि "जिन्दगी में कभी यह बोरा नहीं भरेगा और बाकी बोरे भी ग़ायब हो जाएँगे। तो अब क्या किया जाए!" वह दिन-रात इसी चिन्ता में घुल्ने लगा।

कुछ दिन बाद वह फिर राजा की हजामत बनाने गया। नाई का उदास चेहरा देख कर राजा ने पूछा—"क्यों रे! जब से तुम्हारी तनख्वाह बढ़ी है, मालूम होता है तुम्हारी मुसीबतें भी बढ़ गई हैं। तुम दिन दिन दुबले-पतले होते जा रहे हो। तुम्हारी वह मस्ती, वह खुशी कहाँ चली गई? जब देखो, रोनी सूरत बनाए रहते हो! क्या बात है? कहीं तुम जादू के सात बोरों के फेर में तो नहीं पड़ गए हो?" यह सुनते ही नाई चौंक पड़ा। उसे आश्चर्य हुआ कि बोरों का रहस्य राजा को कैसे मालूम हो गया? "महाराज! आपको मेरे मन की बात कैसे मालूम हो गई?" उसने घबरा कर कहा।
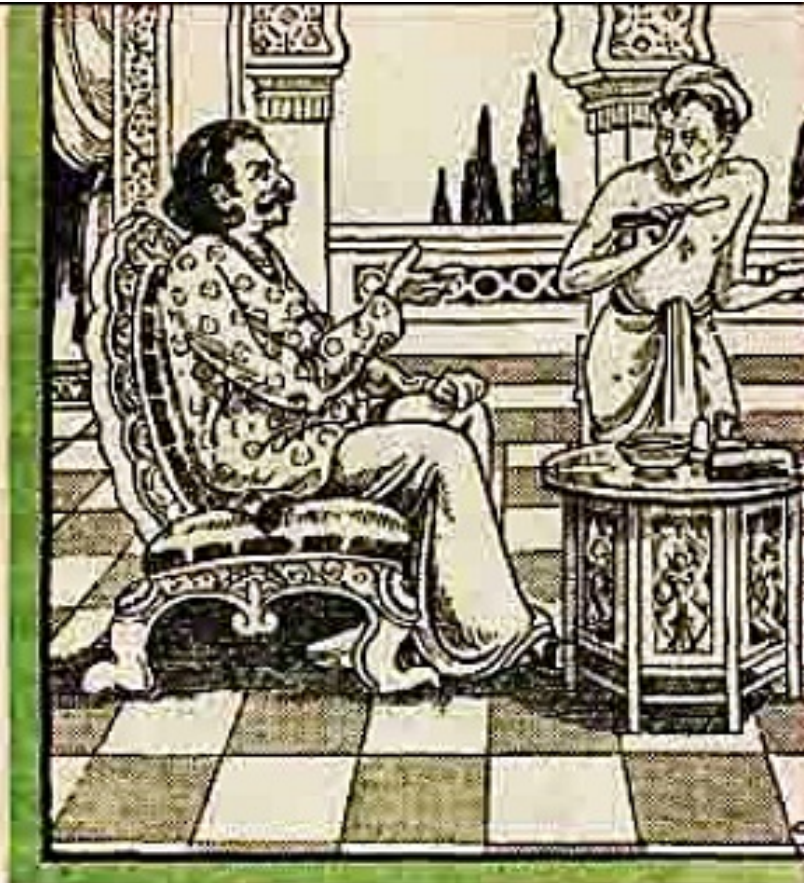
राजा ने हँसते हुए जवाब दिया—"पगले! बोरों की बात तो सारी दुनिया जानती है। क्या

तू अभी तक नहीं जानता था? जङ्गल में उस पेड़ पर एक भूत रहता है। वह ये सातों बोरे जिस को देता है समझ लो कि उसकी नींद हराम हो जाती है। वह चिन्ता में घुल घुल कर मर जाता है। उस भूत ने एक बार मुझे भी इसी तरह अपने फन्दे में फँसा लिया था। लेकिन मैंने उस सातवें बोरे को भरने की कोशिश न की। क्योंकि मैंने सोचा कि ये बोरे इतनी आसानी से मिले हैं। जरूर इसमें कुछ न कुछ धोखा होगा! मुझे सोने-चाँदी की क्या कमी थी? इसलिए मैंने उस पेड़ के पास जाकर कहा—"मैं तुम्हारे ये बोरे नहीं चाहता। लौटा लो अपनी ये अशर्फियाँ।" यह कह कर मैं घर लौट आया। देखा, बोरे जैसे आए थे वैसे ही ग़ायब हो गए। इसलिए तुम भी तुरन्त उस पेड़ के पास जाकर वैसा ही कहो। नहीं तो नाहक़ अपनी जान गँवाओगे। जाओ! जरा भी देरी न करो!" राजा की बातें सुन कर नाई को होश हुआ! उसका मोह दूर हो गया। उसने पेड़ के पास जाकर कहा—"तुम अपने बोरे लौटा लो। मैं तुम्हारी अशर्फ़ियाँ नहीं चाहता।" तब उस कण्ठ-ध्वनि ने कहा—"अच्छा! जाओ! मैं उन्हें लौटा लूँगा।" नाई ने जब घर लौट कर देखा तो वे बोरे जैसे आए थे वैसे ही ग़ायब हो गए थे। लेकिन नाई की बदनसीबी तो देखो, बोरों के साथ-साथ उसकी गाढ़ी कमाई के पैसे भी ग़ायब हो गए! इसीलिए बड़े-बूढ़े कहते हैं—'लालच बुरी बला है!' लालच में पड़ कर आदमी सूद ही नहीं, असल भी गँवा देता है। वही असली भूत है, भाई!

बहुत दिन हुए एक देश में सुशीला नाम की एक लड़की रहती थी। उसके एक छोटा भाई भी था। बचपन में ही उनके माँ-बाप मर गए थे। उनकी देख-रेख करने वाला दूसरा कोई न था। इसलिए कुछ दिन बाद उन्होंने सोचा कि “चलो, किसी दूसरे देश में चले जाएँ! देश देखने का आनन्द तो मिलेगा। यहाँ कौन सी दूध की नदी बहती है!” यह सोच-कर वे लोग उस देश से चले। राह में भाई को जोर की प्यास लगी। वह रोने लगा। तब सुशीला ने कहा—“भैया मेरे! रोओ नहीं! थोड़ी दूर और चलो—ज्यों ही कोई कुआँ नजर आएगा मैं तुम्हें पानी पिला दूँगी।” यों उसने भाई को समझा-बुझा दिया। थोड़ी दूर जाने पर उन्हें एक घोड़े की टाप का चिह्न दिखाई दिया। उसमें पानी भरा हुआ था। लड़के ने मचल कर कहा—“बहन! देखो! इस में पानी है। मैं यह पानी पीकर अपनी प्यास बुझाऊँगा।” तब सुशीला ने कहा—“वह मत पीओ! नहीं तो तुम भी घोड़ा बन जाओगे।” और थोड़ी दूर जाने पर उन्हें गाय के खुर का चिह्न दिखाई दिया। उसमें भी पानी भरा हुआ था। जब भाई ने हठ करके वह पानी पीना चाहा, तो सुशीला ने उसे रोक दिया। कुछ दूर और जाने पर उन्हें भेड़ के खुर का चिह्न दीख पड़ा। उसमें भी पानी भरा हुआ था। लड़का प्यास के मारे मरा जा रहा था। इसलिए इस बार बहन से कहे बिना ही जमीन पर लेट कर उसने वह पानी पी लिया।

जैसे ही वह पानी बच्चे के होठों से लगा कि वह एक मेमना बन गया। वह अपनी छोटी पूँछ हिलाते हुए उछलने कूदने लगा। सुशीला ने जब पीछे मुड़ कर देखा तो उसका भाई नदारद! वह उसे चारों ओर

श्यामशरण

ढूँढ़ने लगी। इतने में एक मेमना उछलता कूदता आया और प्यार से उसका हाथ सूँघने-चाटने लगा। सुशीला को वहीं पास में एक भेड़ के खुर का चिह्न दिखाई दिया। तुरन्त सारा माजरा समझ में आ गया। अब वह क्या करे? रोती-कलपती वहाँ बैठ गई। वह मेमना भी उदास होकर मुँह लटकाए बगल में खड़ा हो गया।

थोड़ी देर में उस देश का राजा उधर से निकला। उसने रोती हुई सुशीला को देख कर पूछताछ की। सुशीला ने अपनी सारी रामकहानी सुनाई। तब राजा ने कहा—

"डरने की कोई बात नहीं। तुम मेरे साथ चलो। मैं तुमसे शादी कर तुम्हें अपनी रानी बनाऊँगा। तुम्हारे भाई को भी बड़े जतन से रखूँगा।" उसने उसे ढाढ़स बँधाया।

सुशीला उस मेमने को साथ लेकर राजा के साथ चली गई। राजा ने उससे ब्याह करके उसे अपनी रानी बना लिया और बड़े प्रेम से उसकी देख-भाल करने लगा।

उसी राज में एक कानी चुड़ैल रहती थी। जब उसने इस नई रानी का हाल सुना तो वह जल उठी। उसने मन ही मन एक उपाय सोचा जिससे वह खुद रानी बन जाए। वह चुड़ैल किसी का सुख फूटी आँखों भी न देख सकती थी।

एक दिन राजा किसी काम से गाँव छोड़ कर गया। चुड़ैल को जब यह मालूम हुआ तो उसने सोचा—'अच्छा मौका है।' उसने तुरन्त एक बुढ़िया का वेष बनाया और सुशीला के पास जाकर कहा—"बेटी! भूख से मरी जा रही हूँ। खाने को दो।" सुशीला तो बड़ी दयालु स्त्री थी। उसने उस बुढ़िया को बुला कर बड़े प्रेम से खिलाया-पिलाया। उस चुड़ैल ने खाने-पीने के बाद सुशीला की

आँख बचा कर पानी के घड़े में कोई दवा घोल दी। वह पानी पीते ही सुशीला बीमार पड़ गई और दिन-दिन कमजोर होने लगी। दो दिन बाद वही चुड़ैल एक वैद्य का भेष बना कर सुशीला के पास आई। उसने सुशीला से कहा—"बेटी! तुम बीमार मालूम होती हो। मैं तुम्हें एक दवा दूँगा। तुम वह दवा बदन में लगा कर नदी में नहा लोगी तो तुम्हारी बीमारी दूर हो जाएगी।" बेचारी सुशीला ने उस कपटी वैद्य की बातों पर विश्वास कर लिया। दवा लगा कर वह दूसरे दिन नदी में स्नान करने गई। पानी में उतर कर उसने डुबकी तो लगाई। लेकिन फिर पानी के ऊपर न आ सकी। उस दवा का प्रभाव ही ऐसा था कि उसे लगाने के बाद पानी में जाते ही आदमी लोहे की तरह भारी हो जाता था। इसलिए वह पानी में डूबी ही रह गई। लेकिन मेमना यह सब देख रहा था। वह नदी के किनारे करुण स्वर में 'बा' 'बा' करके अपनी बहन को पुकारते हुए भटकने लगा।

इधर चुड़ैल ने सुशीला के कपड़े खुद पहन लिए। ठीक सुशीला का रूप बना लिया। फिर बड़ी अकड़ के साथ राजमहल में जाकर सुशीला की जगह बैठ गई। शाम को राजा घर लौट कर आया तो उसे सुशीला को देख कर बड़ी खुशी हुई। उसे क्या मालूम था कि यह सुशीला नहीं है, एक चुड़ैल है और सुशीला नदी के अथाह जल में है! वह सुख से अपने दिन बिता रहा था।

चुड़ैल ने भी देख लिया कि मेमना हमेशा जाकर नदी के किनारे भटकता रहता है। उसे डर लगा कि कहीं उसका रहस्य न खुल जाए। उसने सोचा कि किसी न किसी तरह इस से पिण्ड छुड़ा लेना चाहिए।

इसलिए उसने रसोइए को बुला कर हुक्म दिया कि 'जाओ! उस मेमने को मार कर मांस पका लाओ!'

यह बात जब राजा के कान में पड़ी तो उसने अचम्भे में आकर कहा—"यह कैसी बात है? मेमना तो तुम्हारा भाई है न! तुम्हारे मन में आज यह कैसी सूझी?" चुड़ैल को इसका क्या पता था? वह हैरान होकर बोली—"भाई हो या और कोई हो? मेरे मन में जो आएगा, वही करूँगी। मैं उसे कभी जीता न छोड़ूँगी!"

ये बातें सुन कर मेमना भागा और नदी के किनारे जाकर जोर जोर से कहने लगा—"बहन! बहन! देखो ये दुष्ट मुझे मार डालना चाहते हैं!" उसका मिमियाना सुन कर लोगों का कलेजा फटा जाता था। पानी के तले से सुशीला ने भी मेमने की पुकार का जवाब दिया। रानी की आज्ञा से मेमने को पकड़ ले जाने के लिए आए हुए नौकर ने जब यह सुना तो उसने सीधे राजा के पास जाकर सारा हाल कह दिया। तब राजा खुद नदी के किनारे आया। उसने अपने कानों से फिर मेमने की पुकार और पानी के तले से सुशीला का जवाब सुना। उसने सुशीला की आवाज़ पहचान ली। झट उसने मछुओं को बुलवाया। मछुओं ने पानी में जाल फेंका। सुशीला जाल में पड़ी और पानी से बाहर निकली।

बाहर आते ही सुशीला ने तुरन्त मेमने को गले से लगा लिया। उसके गले से लगते ही मेमने ने फिर उसके भाई का रूप धारण कर लिया। राजा उन दोनों को लेकर तुरन्त महल में लौटा। आते ही उसने उस चुड़ैल को पकड़ कर एक खम्भे से बँधवा कर मार डाला। चुड़ैल के मर जाने से उस राज का सङ्कट दूर हो गया। अब सुशीला अपने भाई के साथ सुख-चैन से रहने लगी।

बहुत दिनों की बात है। कञ्चनपुर में राजा रत्नसिंह राज करता था। बहुत दिनों तक उसके कोई सन्तान न हुई।

एक दिन एक देवी ने राजा को स्वप्न में दर्शन देकर कहा—"हे राजा! एक साल बाद रानी के गर्भ से एक लड़की पैदा होगी। उसका नाम तुम 'गुलाब' रखना। वह लड़की जब हँसेगी तो उसके मुँह से गुलाब झड़ेंगे। जब वह रोएगी तो आँखों से मोती झड़ेंगे।"

ठीक एक साल बाद रानी के एक लड़की पैदा हुई। देवी ने जैसा कहा था, वैसे ही उसके हँसते समय मुँह से गुलाब झड़ते थे और रोते समय आँखों से मोती। उस लड़की का नाम बड़े प्रेम से गुलाब रखा गया।

इस तरह साल पर साल बीत गए और गुलाब सयानी हुई। तब राजा ने गुलाब के लिए योग्य वर चुनने का एक बहुत अच्छा उपाय सोचा। उसने देश-विदेश में ढिंढोरा पिटवाया कि 'जो राजकुमार कहानी सुना कर राजकुमारी को खूब रुला देगा और फिर खूब हँसा देगा, उसी के साथ उसका ब्याह होगा।' यह ख़बर सुन कर देश-देश के राजकुमार गुलाब को कहानी सुनाने आ गए। उन लोगों ने उसे अच्छी-अच्छी कहानियाँ सुनाईं। लेकिन कोई भी अपनी कहानी से उसे न रुला सका और न हँसा ही सका। आख़िर बहुत दिनों बाद पांचाल देश का राजकुमार आया। उसने एक ऐसी कहानी सुनाई कि कहानी ख़तम होते होते राजकुमारी गुलाब अनेकों बार हँसी और रोई। तब राजा ने घोषित किया कि पांचाल के राजकुमार के साथ गुलाब का विवाह होगा। दो एक दिन में बड़ी धूम-धाम के साथ दोनों का ब्याह हो गया।

कुमारी शीला

ब्याह आसानी से हो जाएगा। इसके लिए उसने एक उपाय सोच निकाला। गुलाब और उसकी भतीजी की सूरत एक दूसरे से मिलती-जुलती थी। अगर अगल-बगल में खड़ी हो जातीं तो पहचानना मुश्किल हो जाता कि दोनों में गुलाब कौन है। रानी मौक़े की ताक में रहने लगी।

इतने में एक दिन राजकुमार को किसी काम से राजधानी छोड़ कर कहीं दूसरी जगह जाना पड़ा। मौक़ा देखते ही रानी ने अपनी भतीजी को बुला भेजा। फिर बहुत सा रुपया देकर उसने राज-वैद्य को अपने वश में कर लिया। राज-वैद्य ने गुलाब को बेहोशी की दवा पिला दी। गुलाब जब बेहोश हो गई तब रानी ने उसकी आँखें निकलवा कर अपनी भतीजी को और अपनी भतीजी की आँखें निकलवा कर गुलाब को लगवा दीं। फिर उसने रातों-रात राज-वैद्य द्वारा गुलाब को कहीं बहुत दूर भिजवा दिया। राज-वैद्य गुलाब को एक बीहड़ जंगल में ले गया और एक कुँए में डाल आया।

एक सप्ताह तक राजकुमार अपने ससुराल में रहा। इसके बाद वह गुलाब को लेकर अपने देश लौट गया। ऐसी सुन्दर बहू देख कर राजकुमार के पिता की खुशी का ठिकाना न रहा। लेकिन राजकुमार की माँ गुलाब को देख कर जलने लगी। क्योंकि वह अपनी भतीजी से राजकुमार का ब्याह करना चाहती थी। इसलिए जब राजकुमार गुलाब को ब्याह लाया तो रानी ऊपर से कुछ न बोली। पर भीतर ही भीतर उसने निश्चय कर लिया कि किसी न किसी तरह वह इस चुड़ैल को घर से निकाल कर ही दम लेगी। फिर उसकी भतीजी से राजकुमार का

राजकुमार की माँ ने सब नौकरों को खूब इनाम दिया जिससे उसकी करतूत

का भेद वे न खोलें। इस तरह सारा काम करके वह निश्चित हो गई।

कुछ दिन बाद राजकुमार घर लौट आया। उसके महल में क़दम रखते ही रानी की भतीजी उसके पैरों पर गिर पड़ी और आँखों में आँसू भर कर कहने लगी—'प्रियतम! इतने दिनों तक मुझे अकेली छोड़ कर आप कहाँ चले गए थे? बड़े निर्दयी हैं आप!' रोते समय उसकी आँखों से आँसुओं के बदले मोती गिरे। इससे राजकुमार को उस पर शक करने का कोई कारण न रहा। उसे अपनी प्यारी गुलाब को आँसू बहाते हुए देख कर बड़ी दया आई। उसने उसे बड़े प्रेम से गले लगा कर आँसू पोंछे और धीरज दिया।

लेकिन राजकुमार बहुत कोशिश करने पर भी उसे हँसा न सका। पहले वह बात-बात पर हँस देती थी। लेकिन यह नक़ली गुलाब थी न? उसने गुलाब की आँखें तो लगा ली थीं। इससे रोते समय उसकी आँखों से मोती बरसते थे। लेकिन हँसने पर इसके मुँह से गुलाब तो झरते नहीं! क्योंकि मुँह तो उसका अपना ही था। इसलिए वह कभी हँसती न थी। अगर कभी हँसी आ भी जाती तो मुँह में कपड़ा ठूँस लेती थी।

उधर गुलाब को कुँए में कराहती देख कर एक मछुए ने उसे बाहर निकाला और बड़े प्रेम से अपने घर ले गया। कुछ देर बाद जब गुलाब होश में आई तब मछुए ने पूछा—"बेटी! तुम कौन हो? तुम तो एक देवी के समान लग रही हो। तुम अन्धी कैसे हो गई? क्या अन्धी होने के कारण ही तुम कुँए में गिर पड़ी थीं? मुझे तुम अपना पूरा-पूरा हाल सुना दो। मैं हर तरह से तुम्हारी मदद करने को तैयार हूँ।"

लेकिन गुलाब ने उसे अपना सच्चा हाल नहीं बताया। उसने कहा—"भैया! तुम मुझे कुछ दिन तक अपने घर में रहने दो। इसके सिवा मैं और कोई मदद नहीं चाहती।" मल्लुए ने बड़ी खुशी से उसकी बात मान ली और बड़े प्रेम से उसे अपने घर में आश्रय दिया।

एक दिन गुलाब का पति शिकार खेलते हुए उसी जंगल में जा निकला। उसे एक हिरन दिखाई दिया। उसने अपने तीर से उसे मार डाला। हिरन के मरते ही मल्लुए के घर में गुलाब भी मर गई। क्योंकि गुलाब की जान उसी हिरन में बसती थी। मल्लुए ने बड़े रञ्ज से एक कब्र खोद कर गुलाब को दफ़ना दिया।

राजकुमार अपने शिकार हिरन को घर ले गया। हिरन का मांस बना और पति-पत्नी दोनों ने खाया। एक साल बाद उस नक़ली गुलाब के एक सुन्दर लड़की पैदा हुई। गुलाब की तरह ही उस लड़की के हँसते समय गुलाब और रोते समय आँखों से मोती झरते थे। यह देख कर राजकुमार की रही-सही शंका भी दूर हो गई। उसे पूरा विश्वास हो गया कि वही गुलाब है।

एक दिन एक देवी ने राजकुमार को स्वप्न में दर्शन देकर कहा—"हे राजकुमार! तुम जिसे अपनी पत्नी समझ रहे हो वास्तव में वह गुलाब नहीं है। उस दिन तुमने जब जंगल में तीर से हिरन को मार डाला, उसी समय तुम्हारी गुलाब मल्लुए के घर में मर गई। यहाँ से बारह कोस पर एक जङ्गल है। जाकर देखो, वहीं उसकी कब्र दिखाई पड़ेगी। उस कब्र पर एक सुन्दर गुलाब का पौधा उगा हुआ है। उसकी डालों में गुलाब के फूलों के साथ-साथ मोतियों के गुच्छे भी लटक रहे हैं। यही उसकी पहचान है। उस कब्र के पूरब में एक तालाब है। उस तालाब

का पानी अगर तुम्हारी लाड़ली लड़की अपने हाथों से उस गुलाब के पौधे पर छिड़क देगी तो तुम्हारी असली पत्नी जी जाएगी। जी जाने पर भी वह अन्धी ही रहेगी। क्योंकि तुम्हारी माँ ने उसकी आँखें निकाल कर नक़ली गुलाब को लगा दी हैं। अगर गुलाब को अपनी आँखें मिल जाएँगी तो वह फिर देखने लगेगी। जाओ, इस तरह अपनी गुलाब को प्राप्त करो।"

सवेरा हुआ। राजकुमार अपनी छोटी लड़की को साथ लेकर गुलाब की खोज में चला। वह स्वप्न की बातों को जाँचना चाहता था। वहाँ जाने पर उस देवी के कहे अनुसार गुलाब का पौधा दीख पड़ा। उसकी डालों में मोती की झालरें झूल रही थीं। फिर वह लड़की को साथ लेकर तालाब की ओर चला। थोड़ी दूर जाने पर जब तालाब दिखाई दिया तो उसने अपनी लड़की से कहा—'बेटी! चुल्लू में पानी भर लाओ और चल कर उस गुलाब पर छिड़को।" लड़की ने वैसा ही किया।

कब्र पर पानी के छींटे पड़ते ही गुलाब उसमें से उठ खड़ी हुई। राजकुमार ने उसे देखते ही गले से लगा लिया। तीनों राजमहल लौटे। महल में पहुँच कर राजकुमार ने अपनी माँ को और नकली गुलाब को अपने पास बुलवाया। नक़ली गुलाब ने असली गुलाब को उसकी आँखें लौटा दीं। उन आँखों के पाते ही गुलाब पहले जैसी हो हो गई। राजकुमार ने अपनी माँ, नक़ली गुलाब और राज-वैद्य तीनों को कैदखाने में डालने का हुक्म दे दिया। दुष्टों को अपनी करनी का फल मिला।

राजकुमार अपनी गुलाब और लाड़ली लड़की के साथ सुख से रहने लगा।

तीन बहरे

थोड़ी ही देर में ग्वाला घर से लौट आया। अपनी बकरियों को सही-सलामत देख कर उसे बड़ी खुशी हुई। उसने अपने वचन के अनुसार एक लँगड़ी बकरी ब्राह्मण के पास ले जाकर कहा—"ब्राह्मण-देवता! मैंने आपको बड़ा कष्ट दिया। लीजिए, अब आप अपनी यह लँगड़ी बकरी ले जाइए।" ग्वाले को एक लँगड़ी बकरी लाकर अपने सामने रखते देख ब्राह्मण ने झुँझला कर कहा—"जा! जा! मैं क्या जानूँ

किसी गाँव में एक ग्वाला रहता था। वह वज्र-बहरा था। एक दिन वह गाँव के बाहर बकरियाँ चरा रहा था कि इतने में उसे किसी काम से घर जाना पड़ा।

उसी समय एक ब्राह्मण उधर से आ निकला। तब उस ने उस को बुला कर कहा—"ब्राह्मण-देवता! मुझे एक जरूरी काम से घर जाना है। अगर आप तब तक मेरी बकरियों को देखते रहिएगा तो मैं लौट कर आप को एक लँगड़ी बकरी दूँगा।" यह कह कर घर चला गया। ब्राह्मण ने यह तो देखा कि ग्वाला उससे कुछ कह रहा है। लेकिन यह न जान सका कि वह कह क्या रहा है! क्योंकि वह उससे भी बढ़ कर बहरा था

कि तुम्हारी बकरी की टाँग कैसे टूट गई!" तब ग्वाले ने ब्राह्मण का ध्यान उस बकरी की टूटी टाँग की ओर आकर्षित करते हुए कहा—"वाह! वाह! तो क्या मैं बेईमान हूँ? मैंने पहले ही कह दिया था कि मैं तुम्हें लँगड़ी बकरी ही दूँगा।"

"यह तो खूब रही! मैं क्यों तुम्हारी बकरी की टाँग तोड़ने जाऊँ! मैं तो यहीं पेड़ की छाँह में बैठा हुआ था!" ब्राह्मण ने कहा। अब तो बड़ी चखचख मच गई। न तो ग्वाले की बात ब्राह्मण को मालूम होती थी और न ब्राह्मण की बात ग्वाले को। ग्वाले ने सोचा कि ब्राह्मण

' मसखरा '

बेईमानी करके उसकी एक अच्छी बकरी ले लेना चाहता है। ब्राह्मण ने सोचा कि बकरी की टाँग तोड़ने का अपराध नाहक उसके सिर मढ़ा जा रहा है। दोनों अब जोर जोर से चिल्लाने लगे। "तुम चाहो तो यह लँगड़ी बकरी ले लो! नहीं तो अपना रास्ता नापो! मैं तुम्हें अच्छी बकरी कभी नहीं दूँगा।" ग्वाले ने सरगरमी के साथ कहा। "मैं तुमसे कसम खाकर कहता हूँ कि मैंने तुम्हारी बकरी की टाँग नहीं तोड़ी।" ब्राह्मण ने जवाब दिया। आखिर दोनों झगड़ते झगड़ते उस गाँव के मुखिए के घर गए।

उस दिन मुखिए के घर में भी महाभारत मच रहा था। सबेरे ही सबेरे उन्होंने अपनी श्रीमती जी से लड़ कर कसम खाई थी कि "मैं अब कभी तुम्हारे हाथ का छुआ नहीं खाऊँगा।" इसलिए बेचारे भूखे-प्यासे अपने घर के बाहर चबूतरे पर बैठे हुए थे। ठीक उसी समय ब्राह्मण और ग्वाला उनके पास जा पहुँचे। "देखिए हुजूर! यह ब्राह्मण मुझसे बेईमानी करना चाहता है।" यों शुरू करके ग्वाले ने अपनी सारी कहानी कह सुनाई। मुखिया जी ने कद्दू की तरह मुँह लटकाए ग्वाले का कहना सुना और ब्राह्मण की ओर नजर फेरी। तब ब्राह्मण ने बड़े करुणा-जनक स्वर में अपनी राम-कहानी सुनाते हुए कहा कि 'यह ग्वाला मुझ पर झूठ-मूठ ही शिकायत कर रहा है, जिससे आप को मुझ पर क्रोध आ जाए।' लेकिन यह सब मुखिया जी को सुनाई पड़े तब न! मुखिया जी ग्वाले और ब्राह्मण से भी ज्यादा बहरे थे। दोनों की बातें सावधानी के साथ सुन कर उन्होंने कहा—"तुम दोनों हजार कहो; लाख कहो! मैंने तो अब कसम खा ली है कि फिर कभी उसका मुँह नहीं देखूँगा।"

न्यायी राजा

किसी समय चोलवंश के राजा तञ्जौर में राज करते थे। उनमें एक का नाम धर्मचोल था। उसके राज में धर्म चारों चरण चलता था। उसके राज में सिर्फ मनुष्यों के लिए ही नहीं; अबोध पशु-पक्षियों के प्रति भी न्याय-विचार होता था।

इस न्यायी धर्मचोल के बहुत दिनों बाद एक लड़का पैदा हुआ। उस लड़के का नाम 'नीतिचोल' रखा गया। राजा उसे बड़े प्यार से पालने-पोसने लगा। धीरे-धीरे राजकुमार बड़ा हुआ। वह भी पिता की ही तरह बड़ा धर्मात्मा और दयालु निकला।

एक दिन राजकुमार रथ पर सवार होकर देव-दर्शन करने के लिए मन्दिर की ओर चला। रथ बड़े वेग से जा रहा था कि एक बछड़ा उछलता-कूदता आ गया और रथ के पहियों के नीचे गिर कर मर गया।

उस बछड़े का छटपटा कर मरना देखते ही राजकुमार के होश-हवास उड़ गए। उसके मुँह से कोई बात न निकली। थोड़ी देर बाद किसी न किसी तरह अपने आप को सम्हाल कर उसने कहा—"हे भगवान! मैं बड़े प्रसन्न-चित्त से तुम्हारे दर्शन के लिए घर से निकला था। लेकिन रास्ते में यह भयङ्कर पाप मेरे मत्थे चढ़ गया। यह बात सुन कर मृदुल हृदय वाले मेरे पिता न जाने क्या सोचेंगे? जब उन्हें मालूम होगा कि उनके लड़के को गो-हत्या का पाप लग गया है तो वे न जाने कितने दुखी होंगे! छिः! मैंने अपने पिता के निर्मल यश में कलङ्क लगा दिया। न जाने, बछड़े की माँ इसे कहाँ कहाँ खोजती फिरेगी! और जब वह इसको यहाँ मरा पड़ा देखेगी तो कितना विलाप करेगी? हाय! मैं अपनी आँखों से यह

रमा देवी

दृश्य कैसे देखूँ? अपने पिता को कैसे मुँह दिखाऊँ? नहीं! इससे तो बेहतर यही होगा कि इसके पहले ही मैं यह पापी शरीर त्याग दूँ।" इस तरह राजकुमार मन ही मन बिलखने लगा।

वहाँ जो लोग जमा हो गए थे उन्होंने राजकुमार को बहुत समझाया-बुझाया। इतने में एक गाय करुण स्वर से रँभाती वहाँ आ पहुँची। वह उस बछड़े की माँ थी। यों बछड़े को मरा पड़ा देख उसकी आँखों से जल की धारा बह चली। उसकी करुण चिल्लाहट बार बार आकाश को भेद कर चारों ओर गूँजने लगी। उसका दुख देख कर लोगों की आँखों से बरबस आँसू निकल पड़े।

वह गाय वहाँ ज्यादा देर तक न ठहरी। वह वहाँ से सीधे राजा के महल में चली गई। वहाँ जाकर उसने दीवार से लटकती हुई सुनहरी जञ्जीर दाँतों से पकड़ कर खींची। तुरन्त राजा के कमरे में बँधी हुई न्याय की घण्टी टनटन बजने लगी। राजा जल्दी जल्दी महल से नीचे उतर आया। जब उसने आँसू बहाती हुई गाय को देखा तो वह आश्चर्य में डूब गया। उसने तुरन्त पूछ-ताछ की कि इस गाय को किसने सताया है जो यह इस तरह आँसू बहा रही है। जब उसको सारा हाल मालूम हो गया तब वह मूर्छित होकर ज़मीन पर गिर पड़ा। उसके शोक का वारपार न रहा। क्योंकि उसको मालूम हुआ कि उसके इकलौते लड़के के हाथों ही यह घोर पाप हुआ है।

थोड़ी देर में वह राजा सचेत हुआ। सोचने-विचारने के बाद उसने मन्त्री को बुलाया और कहा—"न्याय कहता है कि खून का बदला खून होता है। न्याय के आगे सभी समान हैं। इसलिए जिस रथ के के नीचे इस गाय के बछड़े की जान गई है, उसी के नीचे राजकुमार की भी जान ले लो!" राजा का यह हुकम सुनते ही मन्त्री

का दिल दहल गया। लेकिन राजाज्ञा टालने का दुस्साहस वह कैसे कर सकता था? नहीं तो राजकुमार की जान वह कैसे ले? इस महान असमञ्जस में पड़ कर मन्त्री ने कहीं जाकर आत्म-हत्या कर ली।

मन्त्री के मरने की खबर जब राजा को मालूम हुई तो वह स्वयं वहाँ गया जहाँ बछड़े की जान गई थी। उसने स्वयं वहाँ खड़े होकर राजकुमार को रथ के नीचे कुचलवा डाला। इस तरह 'खून का बदला खून' पूरा हुआ। तब राजा ने कहा—"मैंने न्याय का पालन किया। लेकिन मन्त्री को और प्राण-प्यारे पुत्र को खोकर मैं कैसे जीऊँ? कैसे राज करूँ? अब मेरे लिए इस राज-पाट में, धन-धाम में क्या धरा है?" यह कह कर राजा ने आँखें मूँद भगवान का ध्यान किया और कटार निकाल कर छाती में भोंक लेनी चाही! ठीक उसी समय आकाश-वाणी हुई—"राजन्! व्यर्थ आत्महत्या न करो। मैं धर्म-देव हूँ। मैंने तुम्हारा बहुत यश सुना था कि तुम्हारे राज में धर्म के चारों चरण हैं, तुम मनुष्य और पशु के लिए समान रूप से न्याय करते हो और तुम्हारे राज में कोई दुखी नहीं है। इसलिए मैंने तुम्हारी परीक्षा लेनी चाही। बड़ी खुशी की बात है कि तुम इस परीक्षा में प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण हो गए हो। इससे तुम्हारा यश और भी चमक उठेगा। तुम इसी तरह धर्म का पालन करते हुए युग युग तक सुख और शांतिपूर्वक राज करो।" राजा ने जब आँखें खोलीं, तो अचरज से देखा कि मन्त्री और राजकुमार हँसते हुए उसके सामने खड़े थे। धर्म-देव की कृपा से मरा हुआ बछड़ा भी जी उठा और उछलने कूदने लगा। यह देख कर गाय हुलास से हुङ्कारती हुई दौड़ी और बछड़े के पास जाकर अत्यन्त आतुरता से उसे चूमने-चाटने लगी। प्रजा की खुशी का ठिकाना न रहा!

एक समय एक गाँव में पुण्डरीक नाम का एक ब्राह्मण रहता था। उसकी पत्नी का नाम था सुचरिता। दोनों स्त्री-पुरुष भगवान विट्ठलनाथ के बड़े भक्त थे।

एक बार उस गाँव के सब लोग दल बना कर झाँझ-मृदङ्ग-मजीरे आदि लेकर भजन-कीर्तन करते हुए विठ्ठलनाथ के दर्शन के लिए पण्ढरीपुर जाने लगे। यह सब देख कर सुचरिता ने अपने पति से कहा—'हम भी इनके साथ पण्ढरीपुर क्यों न चलें?'

'सोचो भी! घर में बूढ़े और कमजोर माता-पिता को छोड़ कर हम कैसे चलें? हमारे लिए तो इस घर में ही पण्ढरीपुर है। विठ्ठलनाथ का ध्यान करते हुए माँ-बाप की सेवा करना ही हमारे लिए सबसे बड़ा धर्म है।' पुण्डरीक ने कहा। सुचरिता का मन तो उन भक्तों के साथ जाने के लिए आतुर था। लेकिन पति की बात सुन कर वह कुछ न कह सकी। क्योंकि पति के वचन के विरुद्ध कुछ कहना उसके लिए असम्भव था। आखिर गाँव के तीर्थ-यात्री पण्ढरीपुर चले गए और ये दोनों व्यक्ति घर पर ही रह गए। जो लोग पण्ढरीपुर गए थे उनके घरों में भी बूढ़े, रोगी या बच्चे कोई न कोई घर में पीड़ित थे ही। लेकिन पुण्डरीक की तरह उनके मन में नहीं आया कि 'हम पण्ढरीपुर जाएँगे तो इनकी क्या हालत होगी?' भक्तों ने सोचा—"हरेक आदमी को अपने कर्म का फल भोगना ही पड़ता है। हम किसी के लिए पुण्य कमाना क्यों छोड़ दें?" इस तरह वे लोग निश्चिन्त होकर विठ्ठलनाथ के दर्शन करने गए।

पुण्डरीक को उनके साथ न जाने की कोई चिन्ता न थी। वह रोज सवेरे उठ कर सैकड़ों

विनायक घोले
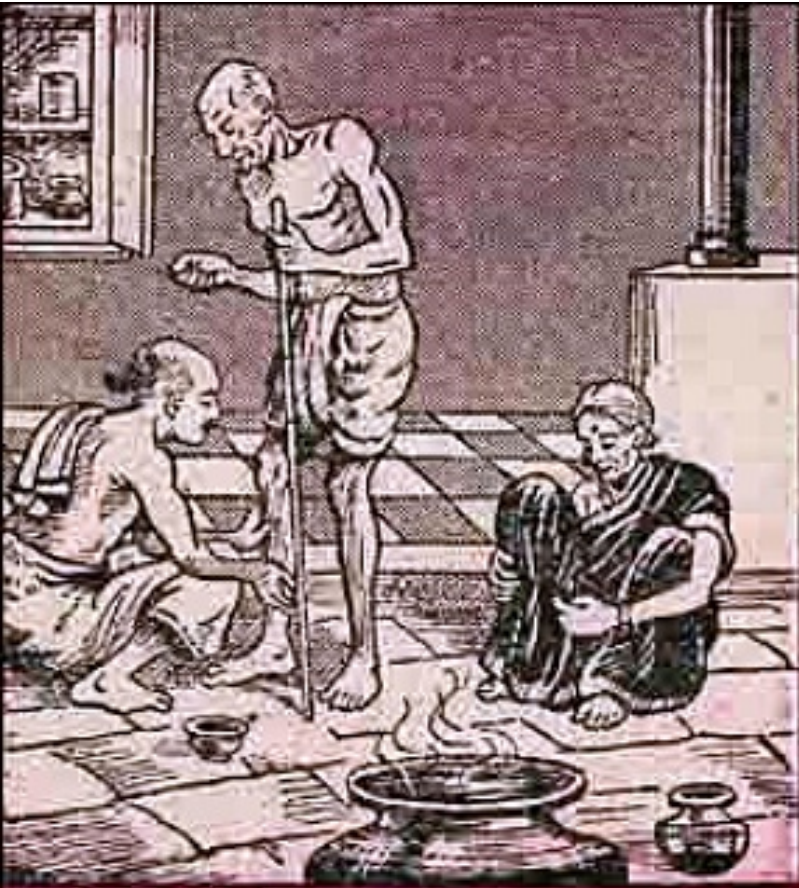
दास-दासियों से बढ़कर माँ-बाप की सेवा करता था। उसके बूढ़े माँ-बाप इतने कमजोर हो गए थे कि उठ बैठ भी न सकते थे। इसलिए पुण्डरीक खुद उनके सारे शरीर में तेल लगा कर खूब मालिश करता। उन्हें गरम पानी से नहलाता। फिर सफ़ेद तौलिए से पोंछ-पाँछ कर साफ़ कपड़े पहना देता और सहारा देकर पूजा-गृह में बिठा आता। फिर पूजा की सारी सामग्री वहाँ लाकर रख देता।

पुण्डरीक के पिता बड़े भारी भक्त, पण्डित और धर्मात्मा थे। लेकिन बुढ़ापे के कारण अब उनकी स्मरण-शक्ति वैसी न रह गई थी। इसलिए मन्त्र पढ़ते-पढ़ते बीच में भूल जाया करते थे। ऐसे समय पुण्डरीक उनके निकट बैठ कर सब कुछ याद कराता रहता था। बूढ़े की आँखों को अच्छी तरह न दिखाई देता था। इसलिए पूजा करते समय चन्दन, फल-फूल, धूप-दीप आदि के लिए जब वह इधर-उधर टटोलने लगता तो पास बैठा पुण्डरीक झट उठा कर हाथ में दे देता। इसके बाद वह स्वयं विठ्ठलनाथ की पूजा करके उन्हें प्रसाद देता। फिर अनेक तरह के पकवान खिला-पिला कर उन्हें खाट पर लिटा देता। इसके बाद वह खुद खाने बैठता था।

बुढ़ापे की वजह से बूढ़े-बूढ़ी का स्वभाव भी बहुत चिड़चिड़ा हो गया था। लेकिन पुण्डरीक इससे कभी विचलित नहीं होता था। वह बच्चों के समान उनकी देख-भाल करता था। जब जो चीज़ चाहते, झट उन्हें ला देता था।

इस तरह वह माँ-बाप की सेवा को ही तीर्थ मान कर घर पर रह गया! इधर अन्य भक्त लोग 'जय पाण्डुरङ्ग विठ्ठल!' का नारा लगाते कीर्तन करते पण्ढरीपुर जा पहुँचे। वहाँ पहुँच कर भगवान के दर्शन के लिए जब वे

मन्दिर में गए तब देखा कि भगवान का तो कहीं पता नहीं! मन्दिर सूना पड़ा था। विट्ठलनाथ का सिंहासन खाली पड़ा था।

भक्त लोग सब बहुत घबराए कि आखिर भगवान गए कहाँ? वे लोग भगवान की राह देखते हुए बहुत देर तक बैठे रहे। लेकिन भगवान लौट कर न आए। निराश होकर वे लोग चले गए। दूसरे दिन भी आकर भक्तों ने भगवान की प्रतीक्षा की। लेकिन दूसरे दिन भी भगवान न लौटे। इसी तरह बहुत दिनों तक भक्तों ने भगवान की प्रतीक्षा की। लेकिन भगवान का पता न चला। सहसा भगवान के इस तरह ग़ायब हो जाने का रहस्य किसी की समझ में न आया। आखिर भक्त लोग सब निराश होकर उदास मन से अपने अपने घर लौट गए।

भगवान विट्ठलनाथ मन्दिर से निकल कर देवी-सहित पुण्डरीक के घर चले आए थे। भक्तों की निराशा का यही कारण था। असल बात यह थी। भगवान को जब मालूम हुआ कि उनका परम-भक्त पुण्डरीक बूढ़े माँ-बाप को छोड़ कर उनके दर्शन करने न आ सका तो वे स्वयं उसको दर्शन देने

आए। यह रहस्य भक्तों को कैसे मालूम होता?

भगवान आकर जब पुण्डरीक के दर्वाजे पर खड़े हो गए, तो उस समय पुण्डरीक अपने बूढ़े माँ-बाप को नहला रहा था। भगवान ने पुण्डरीक को पुकारा—"पुण्डरीक! मेरे प्यारे भक्त! तुम मेरे पास पण्ढरीपुर न आ सके। इसलिए मैं ही तुम्हारे पास आया हूँ।"

"प्रभो! ज़रा ठहरिए! मैं अभी आया। बूढ़े पिताजी का नहाना हो गया। ज़रा उनका शरीर पोंछ डालूँ, नहीं तो उन्हें जुकाम हो जाएगा। ज़रा ठहरिए!" पुण्डरीक

ने कहा। ये बातें सुन कर सुचरिता को बड़ा अचरज हुआ। वह सोचने लगी— जब भगवान देवी-सहित स्वयं दर्शन देने हमारे घर पधारे हैं, तब तुरन्त उनका स्वागत न करके जरा ठहरने को कहना क्या उचित है? अगर कहीं भगवान नाराज हो गए तो? वह बहुत आतुर हो गई। लेकिन भगवान को जरा भी क्रोध न आया। वे शांत भाव से देहली पर ज्यों के त्यों खड़े रह गए।

थोड़ी देर में पुण्डरीक ने माँ-बाप को अन्दर ले जाकर साफ़ कपड़े पहना दिए। फिर वह उन्हें पूजा पर बिठा कर उनकी आज्ञा लेकर भगवान के दर्शन करने आया।

इधर सुचरिता भगवान की ओर टकटकी लगाए देख रही थी। उसके पति ने तुरन्त बाहर आकर भगवान का स्वागत नहीं किया। यह अपराध तो हुआ ही था। तिस पर तुर्रा यह कि भगवान को दरवाजे पर ठहरने के लिए कह दिया! न जाने, भगवान अपने मन में कितना बिगड़े होंगे!

लेकिन यह क्या? सुचरिता अपनी आँखों पर विश्वास न कर सकी। भगवान कहाँ चले गए? उसे सहसा ऐसा मालूम हुआ मानों देहली पर भगवान नहीं, उसके बूढ़े ससुर खड़े हैं। लेकिन उसके ससुर को तो पुण्डरीक अभी-अभी नहला कर पूजा पर बिठा आया था। फिर ये यहाँ कैसे आ गए?

तब उसने अचरज के साथ देवी की ओर देखा। मालूम हुआ—देवी की जगह उसकी बूढ़ी सास खड़ी हैं! अब सुचरिता की समझ में सब कुछ आ गया।

उसके पति पुण्डरीक ने बूढ़े माँ-बाप की सेवा के लिए तीर्थ-यात्रा छोड़ दी थी। इसलिए भगवान स्वयं उसको दर्शन देने उसके घर आ गए थे। इससे भगवान यह बताना चाहते थे कि बूढ़े माँ-बाप की सेवा करना भगवान की सेवा के समान है। इसी से भगवान बूढ़े सास-ससुर के रूप में दिखाई देने लगे।

इतने में पुण्डरीक दण्डवत करके भगवान की स्तुति करने लगा—"हे गरुड-वाहन! जगन्नाथ! पुण्डरीकाक्ष!" तब बहुत प्रसन्न होकर भगवान ने पुण्डरीक को आशीर्वाद दिया—"भक्त-प्रवर! पुण्डरीक! तुमने भक्ति के साथ अपने बूढ़े माँ-बाप की जो सेवा की, वह वास्तव में मेरी ही सेवा है। इसलिए हे पुत्र! जो वर चाहो माँगो। मैं सब कुछ देने को तैयार हूँ।" सुचरिता अब बड़ी उत्सुकता से सुनने लगी कि देखें, पति-देव क्या वर माँगते हैं? पुण्डरीक ने कहा—"भगवान! अन्य भक्तों की तरह हम पति-पत्नी भी हमेशा आप के सन्निकट रहना चाहते हैं। लेकिन बूढ़े माँ-बाप को छोड़ कर हम पण्ढरीपुर नहीं आ सकते। हम पर कृपा करके आप इतना कष्ट उठा कर हमारे घर आ गए हैं! इसलिए मैं चाहता हूँ कि आप हमेशा के लिए यहीं रह जाइए। इससे अधिक मैं और कुछ नहीं चाहता।" यह सुन कर सुचरिता का आश्चर्य और भी बढ़ गया। वह सोचने लगी—"भगवान दर्शन देने तो आए हैं। किंतु क्या वे हमेशा के लिए यहाँ रह जाएँगे?"

लेकिन भगवान विट्ठलनाथ ने अपने भक्त की अभिलाषा पूर्ण करने के लिए उसी घर में, उसी देहली पर रहना स्वीकार कर

लिया। इतना ही नहीं, उन्होंने गङ्गा-नदी को बुला कर कहा—"मैं यहीं रह जाना चाहता हूँ। इसलिए यह जगह कुछ ही दिनों में बहुत प्रसिद्ध हो जाएगी। दूर-दूर से भक्त-गण यहाँ आने लगेंगे। उनके स्नान-पान के लिए यहाँ निर्मल जल वाली एक नदी चाहिए। इसलिए मेरी इच्छा है कि तुम इस गाँव से होकर बहो।"

गंगा नदी तुरन्त वहाँ से होकर बहने लगी। पुण्डरीक का गाँव पुण्डरीक-तीर्थ बन गया। विठ्ठलनाथ के दर्शन के लिए मानव ही नहीं, देवता भी वहाँ आने लगे। अब उस गाँव के भक्तों के आनन्द का ठिकाना न रहा। पुण्डरीक वाली घटना से उन्हें अच्छी शिक्षा भी मिली। उन्हें मालूम हो गया कि जिन माँ-बाप ने उन्हें पाल-पोस कर बड़ा किया, बूढ़े हो जाने पर उनकी सेवा-सुश्रूषा करना भगवान की सेवा से भी बढ़कर पुण्य-प्रद है।

सभी आदमियों के लिए कुछ धर्म बने हुए हैं। जैसे सन्तान के लिए माँ-बाप की सेवा करना, स्त्रियों के लिए पति की सेवा करना, धनियों के लिए ग़रीबों की मदद करना, तन्दुरुस्त लोगों के लिए बीमारों की सेवा करना इत्यादि। इन धर्मों का पालन न करने से मनुष्य कितने ही पुण्य-कार्य क्यों न करे, सब व्यर्थ हो जाते हैं। पुण्डरीक ने अपने धर्म का पालन किया। इसलिए भगवान स्वयं उसे खोजते हुए उसके घर आ गए। दूसरे भक्तों ने अपने धर्मों का पालन नहीं किया। इसलिए उन्हें पण्ढरीपुर जाने पर भी भगवान के दर्शन न हुए।

नाम में क्या धरा है ?

किसी ज़माने में एक गुरूजी के पास एक चेला रहता था। उस का नाम मूरखराम था। इसलिए दूसरे लड़के 'मूरख! मूरख!' कह कर उसकी हँसी उड़ाते थे। तब उसने अपने गुरूजी के पास जाकर कहा—'गुरूजी! आप मेरा नाम बदल कर कोई अच्छा सा नाम रख दीजिए।' तब गुरूजी ने कहा—'अच्छा! तुम शहर में जाकर अपने लिए कोई अच्छा सा नाम ढूँढ़ लाओ। मैं तुम्हारा वही नाम रख दूँगा।' चेला तुरंत खुशी से शहर की ओर चला।

थोड़ी दूर जाने पर उसे कुछ लोग एक अरथी ढोते हुए दिखाई दिए। मूरख ने तुरन्त पूछा—'भई! कौन मर गया है?' उन्होंने जवाब दिया—'अमरसिंह'! मूरख ने सोचा—'वाह! तो अमरसिंह भी मर जाते हैं! फिर इतना अच्छा सा नाम रखने का क्या फ़ायदा हुआ?' उसे अपने भद्दे नाम से अब उतनी नफ़रत नहीं रही। वह आगे बढ़ चला। और थोड़ी दूर जाने पर उसे एक भिखमंगा दिखाई दिया। बस मूरखराम ऐसा मौक़ा हाथ से क्यों जाने देता! उसने तुरंत पूछा—'भई! तुम्हारा नाम क्या है?' उसने जवाब दिया—'दौलतराम।' यह सुनते ही मूरखराम को बड़े ज़ोर से हँसी आई। कहकहे लगाने लगा। यह देख कर भिखमंगे को गुस्सा आ गया। उसने कहा—'तुम बड़े मूर्ख मालूम होते हो! नहीं तो नाम सुन कर भी किसी को हँसी आती है?' यह सुन कर मूरख लजा गया। वह भिखमंगे से माफ़ी माँग कर आगे बढ़ चला। इतने में उसे एक बुड्ढा दिखाई दिया। वह लाठी के सहारे पैर घसीटता हुआ बड़ी मुश्किल से चल रहा था। उसे देख कर मूरख ने पूछा—'दादाजी! आपका नाम क्या है?' 'मेरा नाम 'बालसुन्दर' है।' बुड्ढे ने जवाब दिया। इस बार मूरख को हँसी नहीं आई। उसने कहा—'दादाजी! आपका नाम तो अभी जवान बना हुआ है। लेकिन आप बूढ़े हो गए।' यह सुन कर बूढ़े ने कहा—'सो तो होता ही है। कहीं नाम से भी कुछ आता जाता है!' अब मूरख को पूरा ज्ञान हो गया। उसे अपने नाम से बिलकुल नफ़रत नहीं रही। उसने गुरूजी के पास लौट कर कहा—'गुरूजी! अब मैं अपना नाम नहीं बदलना चाहता।'

बच्चों की देख-भाल

माताओं के लिये

मुसकान

स्वस्थ रहने के लिए मुसकुराते रहना ज़रूरी है। बच्चों को हमेशा हँसमुख रहना चाहिए। रोनी सूरत बना कर हमेशा चीखते-चिल्लाते नहीं रहना चाहिए। हमेशा रोते रहने वाले बच्चों को प्यार करना मुश्किल है। लेकिन हँसमुख बच्चे को देखते ही हर किसी का मन होता है कि उसे गोदी में लेकर दुलार करें।

मुसकान मुसीबतों को भुला देती है। जो अपनी मुसीबतें भूल जाता है उसे चिन्ता कभी नहीं सताती। हँसमुख और मिलनसार व्यक्ति को सभी लोग पसन्द करते हैं। उसे कोई काम कठिन नहीं जान पड़ता। इसलिए हमेशा प्रसन्न रहना चाहिए। जिस आदमी का चित्त प्रसन्न हो वह काम करने में बड़ी फुर्ती दिखाता है।

जो आदमी दिल से हँस सकता है उसे कोई बीमारियाँ नहीं सतातीं। इसलिए बड़ों का कहना है कि प्रसन्नता स्वास्थ्य का एक अंश है। जिस का चित्त प्रसन्न नहीं, वह पेट भर खा भी नहीं सकता और खाई चीज़ पचा भी नहीं सकता। अगर संक्षेप में कहा जाए तो प्रसन्नता सैकड़ों दवाइयों से बढ़कर है।

इसलिए जिस तरह हम अभ्यास के द्वारा गाना-बजाना सीखते हैं, उसी तरह प्रसन्न-चित्त रहना भी सीखना पड़ता है। बुरी से बुरी मुसीबत में भी सिर ऊँचा कर मुसकुराते रहने के लिए बड़े अभ्यास और बड़ी सहनशीलता की ज़रूरत पड़ती है। हमेशा हँसते, मुसकुराते रहो! तब तुम देखोगे कि शोक और संकट तुम्हारे पास फटकते भी नहीं।

तुम्हारी दीदी

श्रीबाई

★
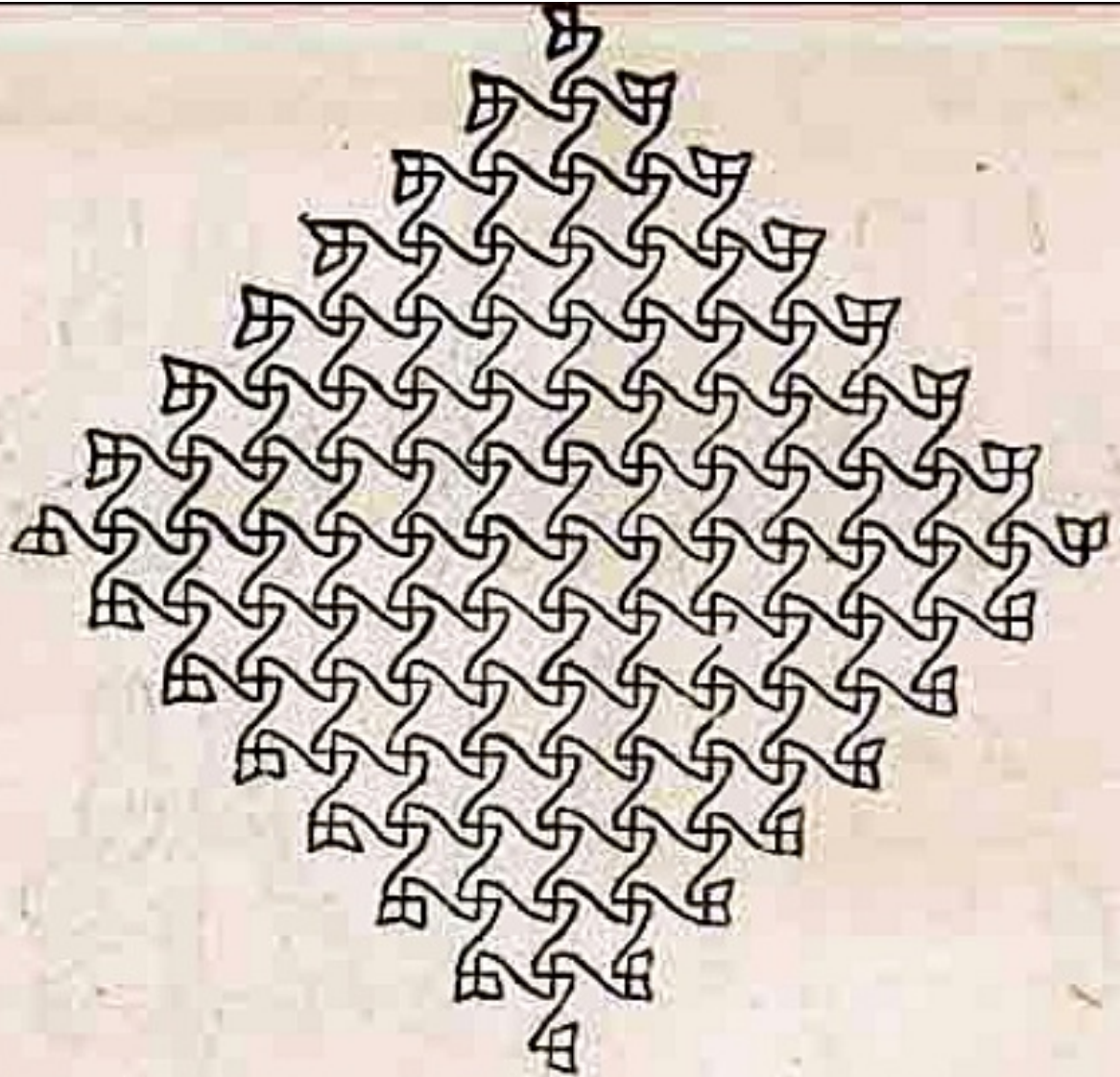
यह छ: हिस्सों में कटी हुई एक जानवर की तस्वीर है। इन हिस्सों को यदि फिर ठीक ठीक मिलाया जाए तो जानवर दिखाई पड़ेगा। यदि तुम यह न कर तो ५५-वाँ पृष्ठ देखो।

★
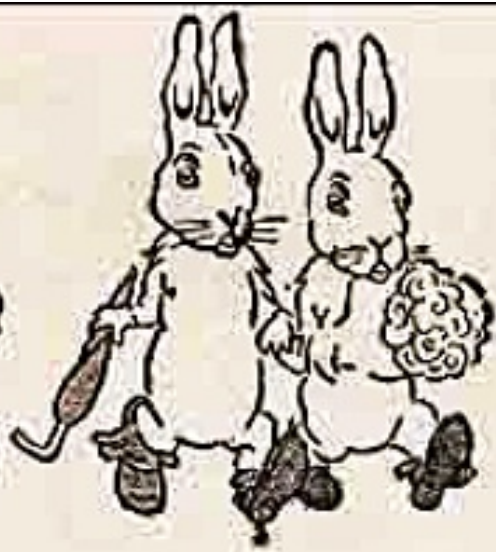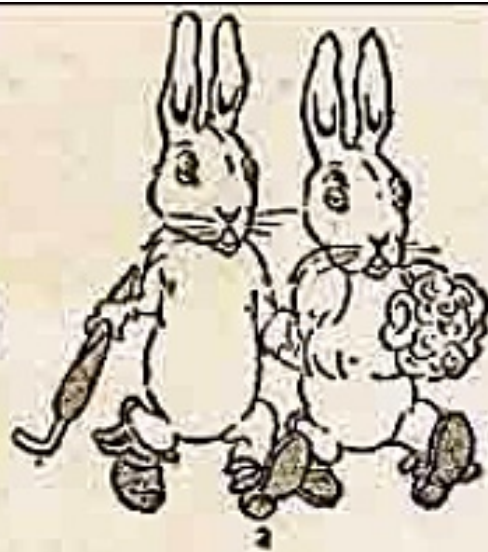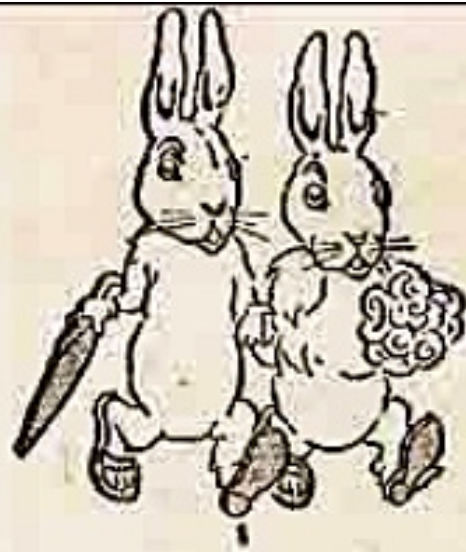
बच्चो! ऊपर खरगोशों के नौ जोड़े हैं। देखने में सब एक से लगते हैं। किन्तु वास्तव में दो ही जोड़े एक से हैं। बताओ तो देखें वे दोनों कौन से हैं? अगर न बता सको तो ५२-वाँ पृष्ठ देखो।
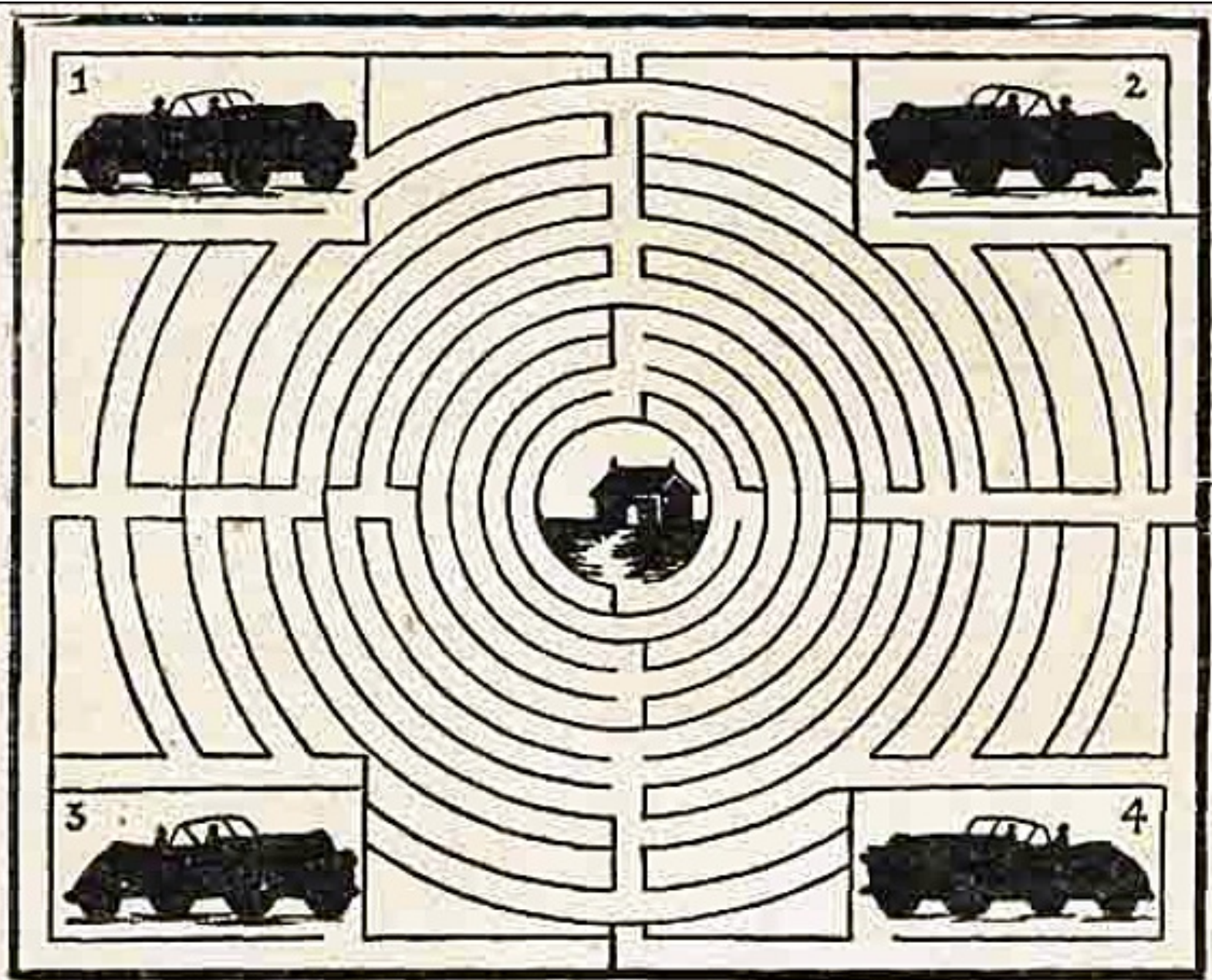
इस वर्ग के चारों कोनों वाली मोटरों में सिर्फ़ एक ही मोटर वर्ग के बीच वाले घर में जा सकती है। जरा बताओ तो देखें—वह कौन सी मोटर है!

'मैं कौन हूँ?' का जवाब:

चन्दामामा पहेली

संकेत

बाएँ से दाएँ

१. ...बुरी बला है।
४. जवाहर के पिता
८. चोट
९. जलन
१०. एक धातु
१२. रावण
१३. एक सिक्का
१४. प्रसिद्ध राजपूत
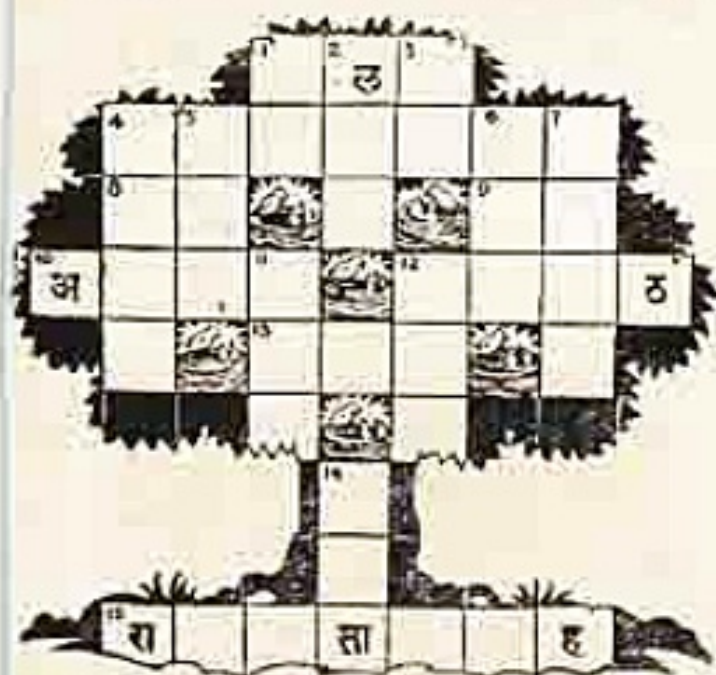
ऊपर से नीचे

१. बनिया
२. स्त्री
३. एक दाल
४. मोम का दीया
५. एक चिड़िया
६. निराश
७. सुंदरता का कमल
११. दया
१३. कृपालु
१४. प्रजा

अगर और मगर

[निरंकार देव सेवक एम. ए.]

अगर, मगर दो भाई थे;
लड़ते खूब लड़ाई थे।
अगर मगर से छोटा था;
मगर मगर से खोटा था।
अगर मगर कुछ कहता था,
अगर नहीं चुप रहता था।
बोल बीच में पड़ता था,
और मगर से लड़ता था।
मगर एक दिन झल्लाया।
गुस्से में भर कर आया -
और अगर पर टूट पड़ा।
हुआ बड़ा भारी झगड़ा।
छिड़ा महाभारत भारी;
गिरीं मेज़ कुर्सी सारी।
माँ यह सुन कर घबराई;
बेलन ले बाहर आई।
दोनों के दो दो जड़ कर -
अलग कर दिए अगर मगर।
एक ओर था अगर पड़ा।
मगर दूसरी ओर खड़ा।
खबरदार! जो कभी लड़े,
बच्चो! बन्द करो झगड़े!

कुशल अभिनेता

उदासी

सन्देह

आनन्द

सोच

यह हिसाब करो तो देखें?

एक स्कूल में दस लड़कों ने मिल कर एक नाटक खेला। उनमें सबसे अच्छा अभिनय करने वालों के लिए पुरस्कार देने का प्रबन्ध भी किया गया था। उस गाँव के बड़े बड़े लोग सभी खेल देखने आए। खेल खतम हुआ। चार लड़कों का अभिनय सबसे अच्छा रहा। उनको पुरस्कार देने के लिए चालीस किताबें मँगाई गई थीं। उन किताबों पर १ से ४० तक सिलसिलेवार नंबर लगा दिए गए थे। १ नंबर वाली किताब का दाम एक आना था। २ नंबर वाली किताब का दाम दो आने था। इस तरह जो जिस संख्या वाली किताब थी उसका उतने ही आने दाम था। चारों लड़कों का अभिनय उत्तम था न? इसलिए यह तय हुआ कि सबको एक ही समान पुरस्कार दिए जाएँ। इसके लिए निर्णेताओं ने सोच-विचार कर एक मार्ग ढूँढ निकाला। उन्होंने कहा कि चालीसों किताबें एक एक को दस दस के हिसाब से बाँटी जाएँ। इतना ही नहीं, हर एक की किताबों का दाम भी बराबर हो। कुल चालीस किताबों का दाम ८२० आने हुआ। इसलिए हरेक के हिस्से में २०५ आने के दाम की किताबें आनी चाहिए। बड़ों ने सोच-विचार कर यह निश्चय तो किया। लेकिन उन्हें यह न मालूम हुआ कि बँटवारा कैसे किया जाए? तब एक छोटे लड़के ने जो खड़ा-खड़ा यह सब देख रहा था, आकर किताबें चारों को बराबर बाँट दीं। क्या तुम बता सकते हो कि उसने किस हिसाब से बँटवारा किया?

अगर न बता सको तो जवाब के लिए ५६ वाँ पृष्ठ देखो!

४८-वें पृष्ठ की नौ चित्रों वाली पहेली का जवाब:

१ और ६ संख्या वाले चित्र एक से हैं।
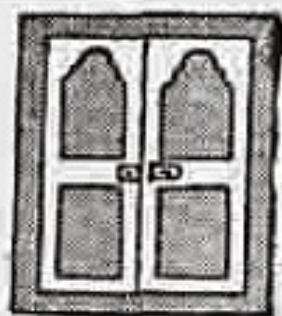
बच्चो! ऊपर के चित्र देखो। हरेक चित्र के नीचे उसका नाम लिखो। फिर हर दो चित्रों के नामों के पहले अक्षर मिला कर बगल में लिख लो। जब तुम उन दोनों पहले अक्षरों को मिला कर पढ़ोगे तो अन्त में दिए हुए अर्थ-वाले शब्द निकल आएँगे। अगर तुम से यह न हो सके तो जवाब के लिए ५६-वाँ पृष्ठ देखो।

मैं कौन हूँ ?

★

मैं चार अक्षरों का
एक नाम हूँ, जिससे
आप सब प्रेम करते हैं।

मेरा पहला अक्षर
चंचलता में है, पर
स्थिरता में नहीं।

मेरा दूसरा अक्षर
विदाई में है, पर
बधाई में नहीं।

मेरा तीसरा अक्षर
आसमान में है, पर
पृथ्वी पर नहीं।

मेरा चौथा अक्षर
सिनीमा में है, पर
नाटक में नहीं।

क्या तुम बता सकते हो
कि मैं कौन हूँ ?

अगर न बता सको तो
जवाब ४९-वें पृष्ठ पर देखो।

विनोद-वर्ग

१			न		
२		न		न	
३	न				
४		न		न	
५			न		

निम्न-लिखित संकेतों की सहायता से
ऊपर के वर्ग को पूरा करो :

१. विश्वासपात्रता
२. बेशुमार
३. नया क़ानून
४. बेमनी
५. अभागा

अगर न पूरा कर सको तो
जवाब ५६-वें पृष्ठ में देखो।

इस तस्वीर को रंग कर अपने पास रख लेना और अगले महीने के चन्दामामा के पिछले कवर पर के चित्र से उसका मिलान करके देख लेना।

५२-वें पृष्ठ वाले हिसाब का जवाब:

४० पुस्तकों को यों बाँटना चाहिए:

अ.	१	८	९	१६	१७	२४	२५	३२	३३	४०
आ.	२	७	१०	१५	१८	२३	२६	३१	३४	३९
इ.	३	६	११	१४	१९	२२	२७	३०	३५	३८
ई.	४	५	१२	१३	२०	२१	२८	२९	३६	३७

तब हरेक हिस्से में दस दस पुस्तकें रहेंगीं। चारों लड़के अपनी मरजी से किसी भी हिस्से की दस पुस्तकें ले सकते हैं। तब लड़कों को पुस्तकें संख्या और कीमत में बराबरी से मिलेंगी।

कटी हुई तस्वीर वाली पहेली का जवाब:
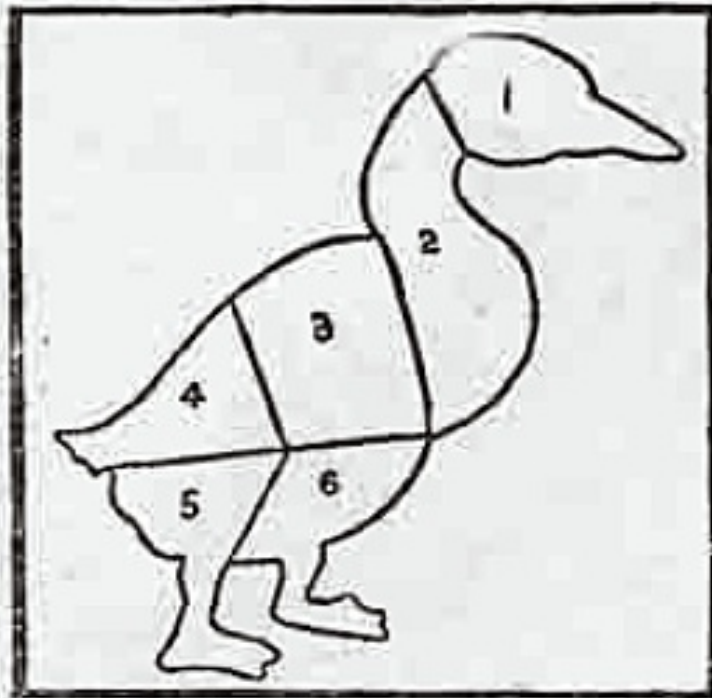
चन्दामामा पहेली का जवाब:

विनोद वर्ग का जवाब:

१. ईमानदारी २. अनगिनत
३. नवविधान ४. अनमनसी ५. बदनसीब

चित्रों वाली पहेली का जवाब:

१. आँख: सूअर — आँसू
२. दर्वाजा: सरिता — दस
३. भूधर: लड़का — भूल
४. आम: गज — आग

Chandamama, May '50

Photo by N. Ramakrishna

नाचने वालीं

CHANDAMAMA (Hindi) MAY 1950 Regd. No. M. 5452

मृगराज